राष्ट्रीय छात्रशक्ति

शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष 2 ■ अंक 01 ■ अप्रैल 2018 ■ ₹10 ■ पृष्ठ 28

1857 का स्वातंत्र्य समर एक पुनरावलोकन

अबाध शिक्षा यात्रा के प्रेरक प्रतिमान डॉ. आम्बेडकर 10

गुरु गोविन्द सिंह और ख़ालसा पंथ की स्थापना 14

ANCIENT INDIAN WISDOM : AN APARTHEID APPROACH 23

कार्यशाला

अभाविप के आयाम एग्रीविजन द्वारा दिल्ली में आयोजित कार्यशाला में मंचासीन केन्द्रीय कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह, अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस. सुबैय्या व अन्य अतिथिगण

आगरा में आयोजित अखिल भारतीय राज्य विश्वविद्यालय कार्यशाला का उदघाटन करते केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक प्रो. नदंकिशोर पांडेय, अभाविप के राष्ट्रीय सह–संगठन मंत्री श्रीनिवास, अ. भा. राज्य विश्वविद्यालय कार्य प्रमुख श्रीहरि बोरिकर व अन्य

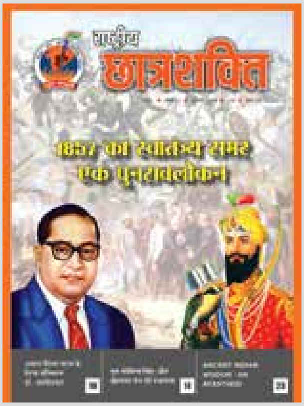

राष्ट्रीय
छात्रशक्ति
शिक्षा–क्षेत्र की प्रतिनिधि–पत्रिका

वर्ष 2, अंक 01
अप्रैल, 2018

संपादक
आशुतोष भटनागर
संपादक–मण्डल :
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन

संपादकीय पत्राचार :
राष्ट्रीय छात्रशक्ति
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

स्वामी, अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक **राजकुमार शर्मा** द्वारा 26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, आई.टी.ओ. के निकट, नयी दिल्ली - 110002 से प्रकाशित एवं ओशियन ट्रेडिंग कं., 132 एफ. आई. ई., पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया, नयी दिल्ली-110092 से मुद्रीत।

इस अंक में

05 **1857 का स्वातंत्र्य समरः एक पुनरावलोकन**
दुनिया के इतिहास में ऐसा कोई सशस्त्र आंदोलन नहीं हुआ जिसमें एक साथ करोड़ों लोगों ने भाग लिया हो। ऐसा भी...

संपादकीय	04
2ND NATIONAL INSTITUTES' STUDENTS MEET ORGANISED BY THINK INDIA	09
अबाध शिक्षा यात्रा के प्रेरक प्रतिमान डॉ. आम्बेडकर	10
राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में जल को मिला सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार	13
गुरु गोविन्द सिंह और ख़ालसा पंथ की स्थापना – डा0 कुलदीप चन्द अग्निहोत्री	14
उन्नत तकनीक के साथ कृषि के लिए आगे आयें युवाः राधा मोहन सिंह	18
राष्ट्र की अवधारणा को समझें छात्रः श्रीनिवास	19
बैंगलुरू में आयोजित 'युवा तरंग' कला महोत्सव संपन्न	20
दिल्ली सरकार के खिलाफ अभाविप का हल्ला बोल	21
अभाविप ने की सीबीएसई अध्यक्ष को बर्खास्त करने की मांग	22
ANCIENT INDIAN WISDOM : AN APARTHEID APPROACH	23
हमारी निजता का व्यापार : डाटा लीक प्रकरण	25

वैधानिक सूचना : राष्ट्रीय छात्रशक्ति में प्रकाशित लेख एवं विचार तथा रचनाओं में व्यक्त दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं। संपादक, प्रकाशक एवं मुद्रक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। समस्त प्रकार के विवादों का न्यायिक क्षेत्र दिल्ली होगा।

संपादकीय

विपक्ष के हंगामे के चलते राज्य सभा को एक दिन में ग्यारह बार स्थगित करना पड़ा। अभी तक के संसदीय इतिहास में यह पहली बार हुआ है। यह अपने आप में एक कीर्तिमान है। यह लगभग स्पष्ट हो गया है कि संसद का यह सत्र बिना किसी कार्यवाही के समाप्त हो जायेगा। हंगामा करने वाले दल संसद के काम-काज को बाधित कर रहे हैं लेकिन आश्चर्यजनक है कि जिन मांगों को लेकर वे अड़े हुए हैं, उन्हीं पर सदन में बहस करने के लिये तैयार नहीं हैं।

संसद के बाहर भी किसी न किसी मुद्दे को लेकर अराजकता पैदा करने की कोशिश हो रही है। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले के विरुद्ध भी लोग जगह-जगह सड़कों पर उतरे। प्रदर्शन के दौरान हिंसा हुई, वाहन फूंके गये, महिलाओं से अभद्रता की गयी और देश भर में दस लोगों को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा। कुछ स्थानों पर हुई हिंसा की घटनाएं सुनियोजित होने का भी संकेत दे रही हैं।

स्पष्ट है कि भारत विरोधी शक्तियां अपनी पूरी ताकत से भारत में हो रहे सकारात्मक बदलावों के विरुद्ध खड़ी हैं। यह केवल राजनैतिक घटनाक्रम नहीं, उससे कहीं ज्यादा है। राजनैतिक विरोध जब भारत की एकता-एकात्मता पर चोट करने लगे तो समाज के सामने उठ खड़े होने की चुनौती आती है। इतिहास की अनेक घटनाएं इसकी साक्षी हैं।

यह माह जिन घटनाओं के लिये स्मरण किया जाता है उनमें देश की रक्षा के लिये दशम सिख गुरु गोविंद सिंह जी द्वारा खालसा पंथ की स्थापना का प्रसंग तो है ही, 1857 में देश की अस्मिता की रक्षा के लिये अंग्रेजों के विरुद्ध पूरे देश के एक साथ उठ खड़े होने की स्मृति भी है। हिन्दू समाज में व्याप्त कुरीतियों के चलते अपने ही देश में अस्पृश्यता के पाप को ढ़ोने के लिये विवश समाज को संघर्ष के लिये तैयार करने वाले महामानव डॉ भीमराव अम्बेडकर की जयंती भी इस माह की प्रेरणा कथा है।

सदियों की उपेक्षा का दंश सह कर भी अपने समाज को शिक्षित बनने का संदेश देने वाले डॉ भीमराव रामजी अम्बेडकर जहां एक ओर संघर्ष का मार्ग दिखाते हैं वहीं अहिंसा और करुणा के भगवान बुद्ध के वचनों को समाज के जीवन में पिरो कर देश की एकात्मता को भी बल प्रदान करते हैं।

इन सभी महापुरुषों के जीवन से प्रेरणा लेकर राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता का जो ध्येय अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने लिया है उसका निरंतर विस्तार यह विश्वास दिलाता है कि ऊपरी विसंगतियों के बीच भारतीय समाज अपने शाश्वत जीवन दर्शन से दूर नहीं गया है। यह विश्वास ही हमारा सम्बल है जो हमें निरंतर बढ़ने की प्रेरणा देता है। इस अंक में कुछ प्रेरणास्पद संस्मरणों के साथ ही अन्य स्थायी स्तंभ संकलित हैं।

बुद्ध पूर्णिमा की हार्दिक मंगलकामनाओं सहित,

आपका
संपादक

1857 का स्वातंत्र्य समरः एक पुनरावलोकन

दुनिया के इतिहास में ऐसा कोई सशस्त्र आंदोलन नहीं हुआ जिसमें एक साथ करोड़ों लोगों ने भाग लिया हो। ऐसा भी कोई इतिहास नहीं मिलता जिसमें लाखों बलिदानों के बाद भी न आक्रमणकारियों के दमन रुके हों और न बलिदानियों का जोश ठंडा बड़ा हो। विश्व इतिहास की इस अनोखी मिसाल का नाम है 1857 का स्वातंत्र्य समर, जिसनें भारत से ईस्ट इंडिया कंपनी को उखाड़ फेंका और न केवल ब्रिटिश साम्राज्य अपितु भारत पर पिछले एक हजार साल से छाई गुलामी का मूलोच्छेद कर स्वतंत्र भारत के निर्माण की आधारशिला रखी।

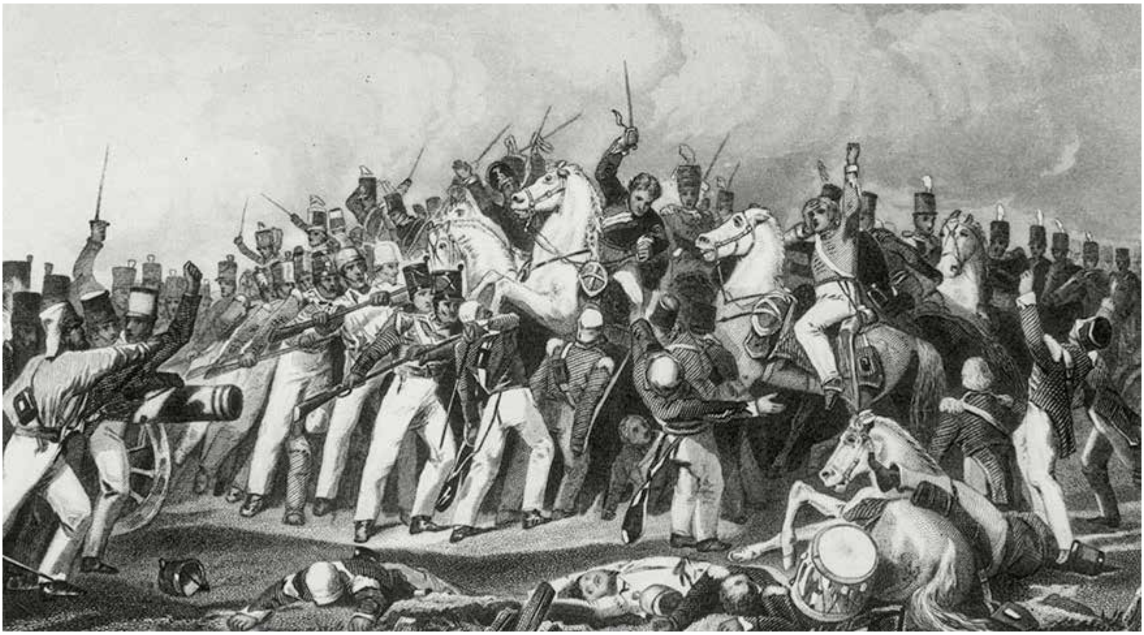

। आशुतोष भटनागर ।

दुनिया के इतिहास में ऐसा कोई सशस्त्र आंदोलन नहीं हुआ जिसमें एक साथ करोड़ों लोगों ने भाग लिया हो। ऐसा भी कोई इतिहास नहीं मिलता जिसमें लाखों बलिदानों के बाद भी न आक्रमणकारियों के दमन रुके हों और न बलिदानियों का जोश ठंडा पड़ा हो। विश्व इतिहास की इस अनोखी मिसाल का नाम है 1857 का स्वातंत्र्य समर, जिसने भारत से ईस्ट इंडिया कंपनी को उखाड़ फेंका और न केवल ब्रिटिश साम्राज्य अपितु भारत पर पिछले एक हजार साल से छाई गुलामी का मूलोच्छेद कर स्वतंत्र भारत के निर्माण की आधारशिला रखी।

ईस्ट इंडिया कंपनी ने न सिर्फ तत्कालीन राज्यों को बंदूक के बल अथवा धूर्तता से हथियाया बल्कि आम लोगों का जीना भी दुश्वार कर दिया। राजा रजवाड़ों के बीच शत्रुता तथा अपनी सत्ता से आगे बढ़कर राष्ट्रीय हित का विचार कर सकने की दृष्टि का अभाव उन्हें

अंग्रेजों के विरूद्ध संगठित नहीं कर सका। धूर्तता, आग्नेयास्त्रों और टेलीग्राम तथा स्टीमर जैसे संचार व यातायात के नये संसाधनों के दम पर अंग्रेजों ने एक - एक कर अधिकांश राज्यों को निगल लिया।

ब्रिटिश राजनीतिक चिंतक और विचारक हरबर्ट स्पेन्सर ने सोशल स्टैटिस्टिक्स में 1857 के संग्राम के समय भारत में व्याप्त असंतोष को व्यक्त करते हुए लिखा - ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों ने भारत के अंदर ही व्यापार करते हुए जिस तरह की अकूत संपदा अर्जित की है वह ऐसे अत्याचारी और दमनकारी तरीकों का कुफल है जिसका दूसरा उदाहरण किसी अन्य देश या अन्य कालखंड में खोज पाना अत्यंत कठिन है।

भारत में पिछले एक हजार वर्षों के लगातार आक्रमणों के कारण राजसत्ताएं तो निरंतर बदलती रहीं लेकिन विदेशी शासकों के अत्याचारों के बावजूद ग्रामीण जीवन आम तौर पर अप्रभावी बना रहा था। लगान वसूली के अलावा राजसेवकों के साथ उनका कोई प्रत्यक्ष संबंध नहीं था।

भारत का यह वैशिष्टय रहा कि अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक देश का हर गांव अपने आप में एक सम्पूर्ण इकाई था जहां उनकी अपनी सामाजिक और न्याय व्यवस्था थी, कार्य विभाजन था। राज्य द्वारा गांव की सामान्य दिनचर्या में कोई हस्तक्षेप नहीं था। यह विशिष्टता ही भारत को एक हजार वर्ष के निरंतर संघर्ष में ऊर्जा देती रही। गांव में जहां किसान सोना उगलने वाली धरती का दोहन कर अपने श्रम से देश को धन - धान्य से भरता रहा वहीं गांव के नौजवान सेना में भरती हो देश की रक्षा में अपना बलिदान देते रहे।

ईस्ट इंडिया कंपनी के भारत में बलशाली होने के बाद इस व्यवस्था पर व्याघात हुआ। कंपनी का उद्देश्य राज्य संचालन न होकर व्यापार था और मुनाफे के लिए वे शोषण के किसी भी स्तर तक जा सकते थे। 1757 में प्लासी का युद्ध जीतने के बाद से सन 1815 में नेपोलियन को वाटरलू के युद्ध में पराजित करने तक अंग्रेजों द्वारा 15 अरब रुपये की विपुल धनराशि को इंग्लैंड भेजा जाना इसका जीता जागता उदाहरण है।

अंग्रेजों के भारत में आने के पहले तक भूमि को राजा की सम्पत्ति माना जाता था। किसान राजा को उसके अधिकारियों के माध्यम से पैदावार का एक अंश दे देता था। यह राजस्व वसूल करने वाले अधिकारी भूमि के स्वामी नहीं थे। भूमि पर किसान का ही कब्जा रहता था और केवल दंडस्वरूप ही किसी किसान को उसकी जमीन से बेदखल किया जाता था।

अंग्रेजों ने इस व्यवस्था में आमूल परिवर्तन करके ग्रामीण जीवन को पूरी तरह झकझोर दिया। उन्होंने राजस्व वसूली करने के लिए लगने वाली वार्षिक बोली में सर्वाधिक बोली लगाने वाले जमींदारों को राजस्व वसूली का काम सौंपा। 1793 में कार्नवालिस ने इन्हीं जमींदारों को भूमि का स्थायी स्वामित्व प्रदान कर दिया। इस नयी व्यवस्था के कारण अंग्रेजों के प्रति सदैव स्वामिभक्त बने रहने वाले जमींदार संवर्ग का जन्म हुआ वहीं कृषक वर्ग के शोषण का एक नया अध्याय प्रारंभ हो गया।

गांव में जहां अंग्रेजों की इन नीतियों से त्राहि -त्राहि मची हुई थी वहीं उन्हीं की संतानों को सेना में अंग्रेज अधिकारियों के हाथों रोज - रोज अपमानित होना पड़ रहा था। चाबुकों से उनकी पिटाई तक की जाती थी। इंडियन म्यूटिनी के प्रथम खण्ड में के लिखता है - यदि देशी सैनिक अपनी सम्पूर्ण दासता के साथ अपना सम्पूर्ण जीवन भी अंग्रेज सेना को समर्पित कर देता था तो उसको जो सर्वाधिक सम्मान प्राप्त होता था वह था मात्र सूबेदारी। कोई भी अंग्रेज सार्जेन्ट अपने से अधिक उच्च पद पर नियुक्त देशी अधिकारी पर हुक्म चला देता था। इस सबकी पराकाष्ठा तो तब हो गयी जब वैलेजली ने घायल भारतीय सैनिकों का इलाज कराने के बजाय उन्हें निर्ममता से गोलियों से उड़ा देने का आदेश दे दिया।

इन सब परिस्थितियों में यह कहना कि 1857 का महासमर ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा भारत की जनता के शोषण के खिलाफ था, अधूरा सच होगा। यह तभी सच हो सकता था जब ईस्ट इंडिया कंपनी के आगमन से पहले देश में कोई संघर्ष न रहा होता। भारत तो अंग्रेजों के आगमन से पहले भी लगातार संघर्षरत था और शताब्दियों की गुलामी भी उसे संघर्ष से विरत नहीं कर सकी थी।

स्वातंत्र्यवीर सावरकर के शब्दों में - सन 1857 ईस्वी में स्वधर्म और स्वराज्य के देवता के अधिष्ठान की स्थापना के लिए जो स्वतंत्रता संग्राम आरंभ किया गया था उसका संकल्प किस दिन लिया गया? उस दिन, जिस दिन अंग्रेज व्यापारियों के मन में प्रथम बार हमारे भारत वर्ष की स्वतंत्रता का अपहरण कर उसको परतंत्रता के पाश में आबद्ध करने का अपवित्र विचार

उदभूत हुआ। उसी दिन से हिन्दू भूमि के अन्तःकरण में क्रांति चेतना का भी संचार हो गया था।

हिस्ट्री ऑफ अवर टाइम्स के तृतीय खण्ड में मैकार्थी ने स्वयं स्वीकार किया है कि केवल सिपाहियों ने ही विद्रोह नहीं किया, इसे कोरी सैनिक क्रांति का नाम नहीं दिया जा सकता। मुसलमानों और हिन्दुओं ने अपने शताब्दियों के विरोध को भूलाकर ईसाइयों के विरूद्ध हाथ मिलाये थे। चर्बी वाले कारतूसों ने तो केवल चिनगारी दहकायी थी और उसी चिनगारी ने सभी ज्वलनशील पदार्थों में आग भड़का दी। यदि इस चिनगारी से अग्नि प्रज्ज्वलित न होती तो किसी अन्य माध्यम से यह कार्य सम्पन्न होता

महान सिपाही विद्रोह का पूर्ण इतिहास में व्हाइट लिखता है - यदि मैं अवधवासियों द्वारा प्रदर्शित साहस की प्रशंसा नहीं करता हूं तो मैं इतिहासकार के पावन दायित्व को नहीं निभा पाउंगा। नैतिक दृष्टि से अवध के तालुकेदारों की महान भूल यह थी कि उन्होंने हत्यारे विद्रोहियों से हाथ मिलाया, किन्तु इसके लिए भी उन्हें सदुद्देश्य से प्रेरित निष्ठावान देशभक्तों के रूप में मान्यता दी जा सकती है क्योंकि वे अपने मातृभूमि और सम्राट के लिए संग्राम कर रहे थे, वे इस स्वराज्य और स्वधर्म के लिए संघर्षरत हुए थे।

इसका प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत किया फैजाबाद के सिपाहियों ने जिन्होंने कारतूस या चर्बी की बात न करके अंग्रेज अफसरों से सीधे कहा - 'हममें इतनी शक्ति है कि तुम्हें देश से बाहर निकाल दें और यही करने की हमारी इच्छा है।' कई अंग्रेज लेखकों ने लिखा कि हिन्दुस्थानी सैनिक अपने-आप को मुल्क का राजा समझता था।

यह भी उल्लेखनीय है कि 1857 का संग्राम कोई अचानक भड़का संघर्ष नहीं था बल्कि इसकी पृष्ठभूमि एक लंबे अरसे से तैयार हो रही थी। वर्षों से अंग्रेजों व ईस्ट इंडिया कंपनी के शोषण की शिकार जनता छिटपुट विद्रोह तो पहले भी करती आई थी, लेकिन इसे राष्ट्रीय स्वरूप नहीं दिया जा सका था।

1757 में प्लासी का युद्ध जीतने के बाद देश भर में ईस्ट इंडिया कंपनी का दबदबा कायम हो गया था। कंपनी ने गांवों को देश की शक्ति के रूप में पहचाना और योजनापूर्वक पहले से चली आ रही व्यवस्था को तोड़ने का प्रयास आरंभ कर दिया। कंपनी ने एक ओर जमीन पर अधिकार करना शुरू कर दिया तो दूसरी ओर किसानों, मजदूरों एवं बुनकरों पर अत्याचारों का सिलसिला भी शुरू हो गया। विद्रोह की पृष्ठभूमि तो यहीं से शुरू हो गई थी।

1857 के स्वातंत्र्य समर के जिन दस्तावेजों के आधार पर अधिकांश इतिहासकारों ने क्रांति का विश्लेषण अथवा इतिहास लेखन किया है, वे दस्तावेज ही स्वतंत्र अथवा तटस्थ नहीं है। इसमें अधिकांश सामग्री ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिक - असैनिक अधिकारियों के बीच हुए सरकारी पत्र व्यवहार की प्रतियां हैं, इन्हीं अधिकारियों द्वारा बाद में लिखे गये संस्मरण हैं अथवा कुछ ऐसे लोग हैं जो यह सब दूर बैठ कर देख रहे थे। वे इस क्रांति के प्रत्यक्षदर्शी तो थे, किन्तु उनके पास तथ्यों के संकलन अथवा उनकी जांच का कोई जरिया न था।

जो अंग्रेज अधिकारी इन घटनाओं का संकलन भी कर रहे थे उनके सामने लक्ष्य इतिहास लिखना न होकर अपनी नीतियों के सही साबित करने और अपनी कमजोरियों को छिपाने का अधिक था। यही कारण था कि उन्होंने इस राष्ट्रीय क्रांति को एक छोटे क्षेत्र तक सीमित बताने का प्रयत्न किया।

बंगाल रेजिमेंट का विद्रोह इतने बड़े पैमाने पर था कि उसे किसी भी हाल मे छिपाया नहीं जा सकता था। लेकिन मद्रास और मुंबई प्रेसीडेन्सी में क्रांति के प्रयास इतने धीमे और मंथर गति से हुए कि वे तत्कालीन परिस्थितियों में उस पर काबू पाने और इन घटनाओं को छिपाने में सफल हुए।

विगत दशकों में जिन शोधार्थियों ने तत्कालीन दस्तावेजों का अध्ययन किया है उन्हें इस बात के पर्याप्त प्रमाण मिले हैं कि भारत का पश्चिमी और दक्षिणी क्षेत्र भी उत्तर और पूर्वी भारत की तरह ही उद्वेलित था। वहां भी जगह - जगह पर विद्रोह हुए, संघर्ष हुए, बलिदान हुए। क्रांति में भाग लेने के आरोप में जिन सात सौ क्रांतिकारियों को काला-पानी की सजा देकर अंडमान निर्वासित किया गया उनमें एक तिहाई से अधिक दक्षिण भारत से थे।

1857 के स्वातंत्र्य समर जैसी घटनाएं किसी देश के इतिहास में कभी-कभी घटती हैं। भारत के इतिहास में भी यह अभूतपूर्व थी। ब्रिटिश इतिहासकारों के अनुसार इस क्रांति में कम से कम चार करोड़ भारतीय सम्मिलित हुए। क्रांति के विस्तार का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि जितने बड़े भू-भाग में क्रांति हुई उसमें यूरोप के फ्रांस, ऑस्ट्रिया और पर्शिया जैसे तीन देश

समा सकते थे। दिल्ली, कानपुर, झांसी, अवध जैसे प्रमुख केन्द्रों सहित सैंकड़ों महत्वपूर्ण स्थान तथा एक लाख वर्ग मील से अधिक भूमि अंग्रेजों को पराजित कर जीत ली गयी।

1858 में ब्रिटिश साम्राज्ञी विक्टोरिया की घोषणा के बाद भी संघर्ष पूरी तौर पर थमा नहीं था। लगभग तीन वर्ष तक प्रत्यक्ष और बाद में परोक्ष रूप में यह संग्राम किसी न किसी तरह जारी रहा। अगले 90 वर्षों तक भारत की स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष चला उस पर 1857 की छाया बनी रही।

सदगुरु राम सिंह कूका के नेतृत्व में कूका विद्रोह, जिसमें उन्होंने पंजाब के 22 जिलों में अपना शासन स्थापित कर लिया था, सैंकड़ों कूकाओं ने मलेरकोट के युद्ध में बलिदान दिया तथा 68 कूका विद्रोहियों को सार्वजनिक रूप से तोप के मुंह में बांध कर उड़ाया गया, वासुदेव बलवंत फड़के के नेतृत्व में विद्रोह जिसमें उन्होंने पूना के आसपास के अनेक स्थानों को अपने अधिकार में ले लिया था, द्वारा न्यायालय में दिये वक्तव्य में अपने-आप को नाना साहब पेशवा का सेनापति बताना, चाफेकर बंधुओं द्वारा पूना में प्लेग कमिश्नर रैण्ड की हत्या कर उसके आतंक से मुक्ति तथा लाला हरदयाल द्वारा गदर पार्टी का संचालन, गदर अखबार का प्रकाशन, भारत मुक्ति के यह सभी प्रयास 1857 के स्वातंत्र्य समर से ही अनुवर्तन थे। ■

डिपेक्स का 29 वां राज्यस्तरीय प्रतिस्पर्धा महाराष्ट्र के सांगली में संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, महाराष्ट्र एवं सृजन संस्था के संयुक्त तत्वाधान में डिपेक्स का 29 वां राज्यस्तरीय प्रतिस्पर्धा का आयोजन महाराष्ट्र के सांगली स्थित वालचंद अभियांत्रिकी महाविद्यालय, कैं. धोंडू कृष्णा साठे नगर में आयोजित की गई, जिसका उदघाटन तंत्र शिक्षण संचालनालय, महाराष्ट्र के संचालक डॉ. अभय वाघ, संजय घोडावत विश्वविद्यालय, कोल्हापूर के संस्थापक संजय घोडावत एवं अभाविप पदाधिकारियों ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। 10 मार्च से 13 मार्च 2018 तक चले तीन दिवसीय डिपेक्स समारोह में महाराष्ट्र एवं गोवा से आये प्रतिनिधियों ने सात सौ अधिक प्रोजेक्ट को प्रदर्शित किये, ये सारे प्रोजेक्ट तकनीकी एवं अनुसंधान से जुडे हुए थे।

समारोह को संबोधित करते हुए ए.आई.सी.टी.ई के अध्यक्ष डॉ. अनिल सहस्त्रबुद्धे ने कहा कि अभाविप ने डिपेक्स के माध्यम से प्रदेश के मेधावी छात्रों द्वारा विकसित किये गये तकनीक को समाज के सामने लाने का अनूठा प्रयास किया है। इस मौके पर अभाविप के राष्ट्रीय सह- संगठन मंत्री श्रीनिवास ने कहा कि तकनीक के बिना देश के विकास की कल्पना नहीं की जा सकती है। हमारे देश में प्रतिभाओं की कमी नहीं है, उन्हें निखारने की जरूरत है। वहीं '21 सदी में युवाओं की भूमिका' पर बोलते हुए अभाविप के राष्ट्रीय मंत्री आशीष चौहान ने कहा कि भारत एक युवा देश है। हमारे देश के युवा तकनीक एवं अनुसंधान के क्षेत्र नित नये प्रयोग कर रहे हैं। हमारे देश के युवाओं को और अधिक प्रशिक्षित करने की जरूरत है ताकि वे अपने हुनर का सही इस्तेमाल कर सके। युवा अगर चाह ले तो देश की तकदीर बदल सकती है। मुझे पूरा विश्वास है कि आने वाले दिनों में तकनीकी रूप से भारत सबसे अव्वल राष्ट्र के रूप में जाना जाएगा।

इस मौके पर सृजन संस्था के श्री. भरत अंमलकर, थ्रस्ट एयरक्राफ्ट प्रायवेट लिमिटेड के संस्थापक कॅ. अमोल यादव, महाराष्ट्र राज्य तंत्र शिक्षण मंडल के संचालक डॉ. विनोद मोहितकर उपस्थित ने 'उद्योग जगत में नवीनतम रुझान' पर अपने राय व्यक्त किये। महाराष्ट्र के लोक निर्माण मंत्री चन्द्रकांत पाटिल ने डिपेक्स में आये प्रतिनिधियों को सम्मानित किया। ■

2nd National Institutes' Students Meet organised by Think India

Aavaahn'18 was conducted on March 11, 2018 at Convention Center, JNU, New Delhi by Think India Delhi team. With the intention to sensitize the youth of the country to inculcate 'Nation first' attitude, event was focus on three themes: Make for India, Serve India, and Live for India. Eminent personalities were invited to delegate lectures on aforementioned themes so as to nourish the minds and souls of the youth.

The first session on 'Make for India' started with an eye-opening talk by Dr. Omkar Rai, Director General of STPI, Govt. of India. He provided an insight into the real scenario of the IT industry, thereby directing the students to realize the potential areas where their services might lead India to soar higher. Shri. Jaswinder Ahuja, MD of Cadence Design Systems India Ltd., delivered a brainstorming lecture appreciating the concepts underlying the emergence of various unique existing technologies and motivated the audience to strive towards developing 'Life changing innovations'. Dr. S Guruprasad, DRDO, spurred the youth to identify their inherent creative skills that have gone into slumber and nurture them to take India to the pinnacle of glory alike their ancestors.

The next session based on 'Serve India' theme opened with an enthralling demonstration of Kalaripayattu (a traditional style of martial art with its origin in Kerala) by septuagenarian Padma Shri Meenakshi Gurukkal making each person in the audience experience goosebumps. Padma Shri Ashok Bhagat talked about his laudable services for the tribal's of Jharkhand and shared several unfolded facts about the pre-independence era. Dr. Girish Kulkarni, Founder of Snehalaya, narrated his journey towards working for the rehabilitation of the victims of the flesh trade, their children and other neglected sects of our society.

The last session was on 'Live for India' began with an enthusiastic talk by Mr. Yogeshwar Dutt who enchanted the audience with his humility and spirit of patriotism. IAS O P Chaudhary exhibited his exemplary endeavors towards bringing a revolutionary change in the education system of Dantewada, despite severely unfavorable circumstances. The session was finally concluded by Mr. Aniruddha Rajput, the youngest member of UN's International Law Commission. He highlighted the glory of Hindi Language and of Bharat, and stimulated the students to plan 'big' at 'small' platforms!

Think India, a podium for the gen now nation builders, has been involved with myriad activities dedicated to the grooming of the youth, so as to infuse in them a spirit of nation reconstruction. ■

अबाध शिक्षा यात्रा के प्रेरक प्रतिमान डॉ. आम्बेडकर

। चन्दन आनन्द।

भारत की सनातन और सब बदलावों एवं नवीनताओं को आत्मसात करने वाली संस्कृति को शब्दों के जरिए समझना-समझाना हमेशा से कठिन रहा है। भारत की इस पहचान या भारतीयता को शब्दों में समझना या व्यक्त कर पाना भले ही असंभव हो, लेकिन समय-समय पर भारत की धरती पर जन्म लेने वाले महापुरुषों का जीवन ही उसे लक्षित करता है। भारत क्या है या भारतीय संस्कृति या भारतीय विचार क्या है? इन प्रश्नों का उत्तर हमें भारत में अलख जगाने वाले अनेक राष्ट्रपुरुषों या महापुरूषों के जीवन से मिलता है। भारतीय युवाओं के प्रेरणास्रोत स्वामी विवेकानन्द के बारे में एक बार रवीन्द्र नाथ ठाकुर कहते हैं, यदि आप भारत को जानना चाहते हैं, तो स्वामी विवेकानन्द को पढ़िए। भारतीय संस्कृति और धर्म को विश्व भर में पहुंचाने वाले स्वामी विवेकानन्द का जीवन ही भारतीय युवाओं के लिए प्रेरणा है। 39 वर्ष की आयु में शरीर त्यागने के बाद भी वह विचार एवं भावना के रूप में आज सैकड़ों युवाओं के भीतर जी रहे हैं और निरंतर कार्य कर रहे हैं।

इसी श्रृंखला में अनेक ऐसे राष्ट्रपुरुष हैं जिनका जीवन ही भारतीय युवा को प्रेरणा देता है। देश और धर्म के लिए परिवार सहित अपना सर्वस्व बलिदान करने वाले गुरु गोबिन्द सिंह जी, मतांतरण और अंग्रेजी शासन के विरोध में बलिदान होने वाले बिरसा मुंडा, विदेशी मुगल शासन को धवस्त कर हिन्दू राज की स्थापना करने वाले छत्रपति शिवाजी महाराज, जम्मू-कश्मीर में पाकिसतानी घुसपैठियों को रोक अपना बलिदान देने वाले 'अमर डोगरा' ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह, अपनी स्वतंत्रता के लिए सिर धड़ से अलग हो जाने के बाद भी अंग्रजों से लड़ने वाले हिमाचल के वजीर राम सिंह पठानिया, देश के भीतर समानता और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ने वाले बाबासाहब आम्बेडकर, आजाद हिन्द फौज का निर्माण करने वाले नेताजी सुभाष चन्द्र बोस, आदि जैसे हजारों प्रेरक पुरुष आज भारतीय युवा के जीवन को दिशा दे सकते हैं या देते हैं।

बाबासाहब आम्बेडकर को छोड़कर अन्य सब महापुरुषों ने किसी बाहरी शक्ति या आक्रांताओं के विरुद्ध देश को संगठित कर लड़ने का काम किया। शायद इसी वजह से देश के लिए उनका योगदान कहीं न कहीं केवल संविधान निर्माता तक ही आंका जाता है, लेकिन जो लड़ाई बाबासाहब आम्बेडकर ने लड़ी वो देश के भीतर ही स्वतंत्रता और समानता की लड़ाई थी। यदि हम समग्रता से उनके जीवन और कार्य का विश्लेषण करें तो देश और समाज के लिए जो काम बाबासाहब आम्बेडकर कर गए वह किसी भी राष्ट्रपुरुष

के योगदान से कम नहीं है। जो लड़ाई उन्होंने लड़ी यदि वह न लड़ी गई होती और यदि आज भी उस तरफ ध्यान न दिया जाए तो शायद देश की एकता और अखण्डता को ध्वस्त होने में समय न लगे। कम शब्दों में कहें तो विश्व इतिहास में हमें बिरला ही कोई ऐसा उदाहरण मिलता है जहां बिना किसी खून-खराबे या गृह युद्ध के समाजिक परिवर्तन की इतनी बड़ी लड़ाई लड़ी गई हो।

भारत में सामाजिक परिवर्तन की इतनी बड़ी लड़ाई बिना देश या समाज को तोड़े या बिना किसी गृह युद्ध के लड़ी गई तो इसका सारा श्रेय बाबासाहब आम्बेडकर के विवेकपूर्ण संघर्ष को जाता है। एक ऐसा संघर्ष जो समाज पर गहरे और गंभीर कटाक्ष तो कर रहा था, पर उसे

टूटने नहीं दे रहा था। समाज को झकझोर तो रहा था, उसमें सुधार तो चाहता था पर विद्रोह या बदला नहीं। देश और समाज में समानता, बंधुता और स्वतंत्रता का बाबासाहब आम्बेडकर का विचार जितना उनके जीवन के अनुभवों से प्रेरित है उतना ही उनकी शिक्षा से भी। बाबासाहब आम्बेडकर के जीवन यात्रा से अधिक प्रेरणा उनकी शिक्षा यात्रा भारतीय युवाओं को देती है।

14 अप्रैल 1891 को भिमाभाई और रामजी सकपाल के घर बाबासाहब आम्बेडकर का जन्म हुआ। शिक्षा के शुरुआती कुछ वर्षों में ही बाबासाहब समझ गए थे कि अछूत होने की वजह से शिक्षा ग्रहण करना उनके लिए इतना आसान नहीं है। बाल्य काल से ही विद्यालय में अपने भाई के साथ कक्षा से बाहर बैठ शिक्षा ग्रहण करना, शिक्षकों द्वारा उपेक्षित होना, विद्यालय में नल से पानी न पीना और यदि चपरासी स्कूल न आए तो पूरा दिन प्यासा रहना, जैसी अनेक घटनाओं का दर्द बाबासाहब ने अपनी शिक्षा यात्रा के शुरुआती दौर में ही महसूस कर लिया था। अछूत होने की वजह से विद्यालय में संस्कृत पढ़ने की उनकी इच्छा पूर्ण नहीं हो पाई और उन्हें जबरन फारसी पढ़नी पड़ी। प्रतिदिन न्यायविरुद्ध तिरस्कार का घूंट पीकर भी बाबासाहब की शिक्षा पाने की भूख कम नहीं हुई। इतने अवरोधों के बावजूद 1907 में आम्बेडकर ने 10वीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। किसी अछूत बालक के लिए यह एक असामान्य उपलब्धि थी। पूरे समाज द्वारा उनकी इस उपलब्धि का जश्न मनाया गया।

जिस बालक ने कक्षा के बाहर बैठकर और उपेक्षित रहकर अपनी स्कूली शिक्षा पूर्ण की, उसके लिए आगे की राह कतई आसान नहीं थी। आय के ठोस साधन न होने की वजह से भी एक वंचित वर्ग के बालक के लिए उच्च शिक्षा पाना असंभव साथा, लेकिन बाबासाहब की शिक्षा के प्रति बेहिचक प्यास को देखकर उनके पिता जी ने जैसे-तैसे आगे की शिक्षा का बन्दोबस्त किया।

जिस बालक ने कक्षा के बाहर बैठकर और उपेक्षित रहकर अपनी स्कूली शिक्षा पूर्ण की, उसके लिए आगे की राह कतई आसान नहीं थी। आय के ठोस साधन न होने की वजह से भी एक वंचित वर्ग के बालक के लिए उच्च शिक्षा पाना असंभव साथा, लेकिन बाबासाहब की शिक्षा के प्रति बेहिचक प्यास को देखकर उनके पिता जी ने जैसे-तैसे आगे की शिक्षा का बन्दोबस्त किया। लेकिन कुछ समय बाद पैसों की कमी के चलते बाबासाहब के लिये शिक्षा ग्रहण करना मुश्किल हो गया। तब उनके एक शिक्षक ने आगे बढ़कर बड़ोदरा के महाराज सयाजीराव गायकवाड़ से 25 रुपये प्रतिमाह की व्यवस्था कर बाबासाहब की सहायता की। कहीं से पुस्तकें और कहीं से पैसे लेकर बाबासाहब ने 1912 में ऐलफिन्स्टन कालेज से अपनी बी.ए. की शिक्षा पूर्ण की।

अनंत आर्थिक एवं सामाजिक अवरोधों के बावजूद भी बाबासाहब आम्बेडकर की शिक्षा के प्रति आस्था कम नहीं हुई। दो वक्त के भोजन के ठीक से पैसे न होने के बावजूद भी उनका सारा ध्यान शिक्षा को अर्जित करने में सदा रहा। बी.ए. की डिग्री प्राप्त करने के बाद, उनकी इच्दा उच्च शिक्षा के लिए हुई। एक बार पुनः वड़ोदरा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ विद्वान छात्र की मदद के लिए आगे आए। उन्होंनें उच्च शिक्षा के लिए बाबासाहब को कोलंबिया विश्वविद्यालय भेजा। बाबासाहबआम्बेडकर पहले भारतीय थे जो अमेरिका में जाकर शिक्षा ले रहे थे। जुलाई 1913 को वह अमेरिका गए। विदेश में रहकर भी वह पूरे दिन पढ़ाई में ही लीन रहते थे। उन्होंने कड़े परिश्रम से 1915 में अर्थशास्त्र में अपनी एम.ए. की डिग्री प्राप्त की। इस दौरान विदेशों में अपने शोधपत्रों और निबंधों द्वारा उन्होंने जमकर अंग्रेजी शासन को लताड़ा। 1916 में अपना शोध जमा कराने के बाद 8 वर्ष उपरान्त बाबासाहब आम्बेडकर को कोलंबिया विश्वविद्यालय से पी.एच.डी. की डिग्री मिली।

इसी दौरान लाला लाजपत राय विदेशों में पढ़ रहे भारतीय विद्यार्थियों से संपर्क स्थापित कर उन्हे स्वदेश आ अंगेजों के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा दे रहे थे। लाला लाजपत राय द्वारा इस विषय पर बात करने पर बाबासाहब ने उत्तर दिया कि 'मेरा उद्देश्य इस समय केवल शिक्षा हासिल करना है'। इसका मतलब यह नहीं था कि वह भारत की स्वतंत्रता नहीं चाहते थे या देश के लिए लड़ना नहीं चाहते थे। अपनी अवस्था बताते हुए उन्होंने लाला लाजपत राय से कहा कि जितने भी भारतीय यहां पढ़ रहे हैं, वह देश के लिए लड़कर

पुनः वापस आ अपनी पढ़ाई कर सकते हैं, परन्तु मेरी स्थिति ऐसी नहीं है कि मैं दोबारा अपनी शिक्षा पूरी कर सकूं। यदि मैं अभी चला जाऊं तो शायद आर्थिक और सामाजिक बाधाओं की वजह से जीवन में मुझे कभी शिक्षा प्राप्त करने का अवसर न मिले।

छात्रवृत्ति की अवधि बची होने के कारण इसके तुरन्त बाद बाबासाहब 1916 में लंदन गए। वहां उन्होंने लंदल स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स में राजनीति शास्त्र एवं अर्थशास्त्र पढ़ने के लिए प्रवेश लिया और साथ ही वकालत की पढ़ाई के लिए भी लंदन के ग्रे इन में प्रवेश लिया। 1917 में छात्रवृत्ति समाप्त होने की वजह से लंदन से 4 वर्ष के अंदर शिक्षा पूर्ण करने की अनुमति लेकर बाबासाहब अगस्त 1917 में भारत पहुंचे। इतनी शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी भारत पहुंचने पर वह अछूत ही बने रहे। वड़ोदरा राज्य में उन्हें मिलिट्री सचिव की नौकरी मिली। लेकिन इतने विद्वान होने और इतने बड़े पद पर बैठने के बावजूद भी चपरासी प्रदूषित होने के डर से उन्हें पानी नहीं पिलाता था और दस्तावेजों को उनकी टेबल पर दूर से फेंक देता था। विदेशों से बड़ी-बड़ी डिग्रियां हासिल करके आए बाबासाहब को पूरे वड़ोदरा में रहने को एक कमरा नहीं मिला। अंततः उन्हें वह नौकरी छोड़नी पड़ी।

लंदन में छोड़कर आई पढ़ाई उन्हें बेचैन करती रही। अंततः कुछ पैसे स्वयं जोड़कर, कुछ कोल्हापुर के महाराजा से लेकर और कुछ अपने मित्र से उधार लेकर बाबासाहब अपनी पढ़ाई पूरी करने के लिए 1920 में फिर लंदन के लिए रवाना हुए। पैसों के अभाव के कारण वह दिन में केवल एक दफा डबल राटी खाकर गुजारा करते थे। लंदन संग्रहालय और लंदन विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में दिन के 18 घण्टे बाबासाहब के इस दौरान गुजरते थे। लंदन संग्रहालय के चौकीदार के अनुसार सुबह संग्रहालय खुलने से पहले बाबासाहब वहां खड़े रहते थे और शाम को उन्हें जबरदस्ती निकालना पड़ता था और प्रतिदिन जाते समय उनके जेब और बस्ता कागजों और किताबों से भरा रहता था। 1921 में उन्होंने लंदन से अपनी एम.एस.सी. की डिग्री ली और 1922 में अपना शोध जमा करवाया। साथ ही अपनी वकालत की पढ़ाई भी पूरी की।

इसी बीच 1922 में बॉन विश्वविद्यालय में प्रवेश लेने के लिए वह जर्मनी भी गए। बाबासाहब अपने पास उपलब्ध पैसों का 90 प्रतिशत व्यय पुस्तकों पर करते थे। पैसे खत्म होने की वजह से अप्रैल 1923 में उन्हें पुनः भारत आना पड़ा। भारत आने के बाद उन्होंने पुनः अपनी थिसिस 'रुपये की समस्या' लंदन भेजी और कुछ ही दिनों में उन्हें उसके लिए भी विज्ञान में पी.एच.डी. की डिग्री लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स से मिल गई। अब बाबासाहब आम्बेडकर लंदन से बैरिस्टर और विज्ञान में डाक्ट्रेट के साथ अमेरिका में कोलंबिया विश्वविद्यालय से भी पी.एच.डी. थे और बॉन विश्वविद्यालय से पढ़ाई कर रहे थे।

बाबासाहब आम्बेडकर उस समय भारत के सबसे शिक्षित व्यक्ति थे। शायद आज भी उनकी विद्वता को टक्कर देने वाले विद्वान हमारे देश में मौजूद न हो। इस सब के बावजूद भी अपने जीवन काल में और उसके उपरान्त भी उन्हें हाशिए में धकेलने की साजिश होती रही। जो लोग आज के समय में भी संसाधनों के अभाव का बहाना लेकर शिक्षा से वंचित रहने की बात करते हैं, बाबासाहब की शिक्षा यात्रा उनके लिए एक उत्तर है। भारतीय युवाओं के लिए जितनी प्रेरक बाबासाहब कीशिक्षा यात्रा है, उतनी शायद ही दुनिया के अन्य किसी महापुरुष की हो। शिक्षा हासिल करने या शिक्षा के लिए भूख की जो प्रेरणा हमें बाबासाहब आम्बेडकर के जीवन से मिलती है, वह न केवल भारत के युवाओं बल्कि देश की दिशा भी बदल सकती है।

बहुत कम लोग जानते हैं कि उनके शोध के सुझावों से प्रेरित होकर ही भारतीय रिजर्व बैंक और वित्त आयोग अस्तित्व में आए। वह संविधान निर्माता के साथ-साथ, एक महान अर्थशास्त्री, एक कुशल नेता, एक योग्य पत्रकार, एक समाजशास्त्री औरराष्ट्रभक्त समाज सुधारक भी थे। इसी शिक्षा के दम पर उन्होंने समाज को सुधारने की जिम्मेवारी अपने कंधों पर ली और भारत को समानता, बंधुता और स्वतंत्रता का अधिकार दिलाने वाला एक ऐसा संविधान दिया, जो आज विश्व के लिए मिसाल है। अपनी महान संस्कृति, सभ्यता और मूल्यों से विचलित हो जो सामाजिक विभेद भारतीय समाज में पैदा हुआ, आजीवन अपनी शिक्षा के दम पर उसके विरुद्ध लड़कर बाबासाहब ने राष्ट्र के पुनर्निर्माण में अपनी भूमिका को भलीभांति निभाया, अब इस श्रृंखला को आगे बढाने की बारी हम सभी की है। ■

(लेखक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय में शोधार्थी हैं)

राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में जल को मिला सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के आयाम राष्ट्रीय कला मंच द्वारा आयोजित राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव (नेशनल फिल्म फेस्टिवल) में लघु फिल्म 'जल' को सर्वश्रेष्ठ फिल्म सम्मान से सम्मानित किया गया। शीर्ष सम्मान के अलावा, जल के निर्माता ने एक लाख रूपये का पुरस्कार जीता। समारोह में दूसरा बड़ा विजेता ए (यू) एन था, क्योंकि उसे सर्वश्रेष्ठ युवा निर्देशक पुरस्कार और सर्वश्रेष्ठ छायांकन सम्मान मिला। अन्य प्राप्तकर्ताओं में हू इम आई और ज़ेड शामिल हैं, जिन्हें सर्वश्रेष्ठ पटकथा लेखक का पुरस्कार मिला, अविष्कारी, जिसने सर्वश्रेष्ठ प्लेबैक सम्मान और कॉर्नर को सर्वश्रेष्ठ फिल्म संपादन पुरस्कार मिला।

विजेताओं की सूची: –

प्रथम फिल्म पुरस्कार - जल
सर्वश्रेष्ठ युवा निर्देशक - ए (यू) एन
सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट लेखक - मैं कौन हूँ और ज़ाद
सर्वश्रेष्ठ पार्श्वसंगीत - अवधकारी
सर्वश्रेष्ठ छायांकन - ए (यू) एन
बेस्ट फ़िल्म एडिटिंग - कॉर्नर
तीन विशेष पुरस्कार (लाइववायर छात्रवृत्ति) - इमरान, पेंसिल, डिसड डिस

राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का आयोजन राष्ट्रीय कला मंच के द्वारा विद्यार्थी निधि एवं मुंबई फिल्म सिटी (महाराष्ट्र सरकार का एक उपक्रम) के सहयोग से मुंबई स्थित सांताक्रूज में किया गया था। राष्ट्रीय कला मंच के राष्ट्रीय संयोजक सौरभ उनियाल बताते हैं कि इस महोत्सव में देश के 16 राज्यों से 85 लघु फिल्मों और चीन एवं लंदन से तीन अन्य लघु फिल्म प्राप्त हुए। प्राप्त भागीदारी में चयन समिति ने स्क्रीनिंग के लिए शीर्ष 40 लघु फिल्मों का चयन किया। चयन समिति ने इसकी सूचना 36 प्रतिभागियों को दी। उन्होंने बताया कि फिल्म महोत्सव में लगभग दो सौ युवा फिल्म निर्माताओं ने भाग लिया।

राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव का उदघाटन समारोह में बॉलीवुड फिल्म निर्देशक विवेक अग्निहोत्री और अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने महोत्सवके उद्देश्य को रेखांकित किया। तत्पश्चात प्राप्त लघु फिल्मों की स्क्रीनिंग को निर्णायक मंडल के सामने प्रस्तुत किया गया। स्क्रीनिंग के पश्चात अतिथि व्याख्यान का आयोजन किया गया जिसे गोपाल मल्होत्रा (एमडी लाइववायर), अतुल श्रीवास्तव (टीवी कलाकार) और स्वामीनाथ पांडे (उद्योग के एक अनुभवी व्यक्तित्व) ने संबोधित किया। पुरस्कार का वितरण एक दिन बाद किया गया, जिसमें अभिनेता श्री ललित परिमू, अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष व विद्यार्थी निधि के सचिव मिलिंद मराठे बतौर अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। ■

गुरु गोविन्द सिंह और ख़ालसा पंथ की स्थापना - डा0 कुलदीप चन्द अग्निहोत्री

ख़ालसा प्रथा की स्थापना के अवसर पर विशेष

मध्यकालीन दश गुरु परम्परा के नवम गुरु श्री तेग़ बहादुर जी ने अपने बलिदान से देश में व्याप्त निराशा के वातावरण को समाप्त करके नई उर्जा और उत्साह का संचार कर दिया था। अपने पिता श्री तेग़ बहादुर जी की शहादत के बाद 1676 के वैशाख मास में श्री गोविन्द सिंह जी दशम गुरु के पद पर आसीन हुए। उन्होंने अपने पिता की शहादत को श्रद्धांजलि दी--

ठीकर फोड़ दिल्लीस सिर प्रभु पुर किआ प्यान, तेग़ बहादुर सी क्रीआ करी न किन्हू आन।

तेग़ बहादुर के चलत भयो जगत को सोक, है है है सब जग करे जय जय जय सुर लोक।

आगे फिर लिखा--

तिलक जंञू राखा प्रभ ताका॥ कीनो बडो कलू महि साका॥

साधन हेति इती जिनि करी॥ सीसु दीया परु सी न उचरी॥

धरम हेत साका जिनि कीआ॥ सीसु दीआ परु सिररु न दीआ॥ (दशम ग्रंथ)

श्री तेग़ बहादुर के बलिदान से सुर लोक में जो जय जयकार हुआ था, उस जय जयकार को मृत्यु लोक में उतार दिया गोविन्द सिंह जी ने। गुरु तेग़ बहादुर जी के आत्मबलिदान के बाद पंडित किरपा राम भी घाटी छोड़कर आनन्दपुर में ही आ गया। वहाँ उसने दशम गुरु गोविन्द सिंह जी को संस्कृत भाषा पढ़ाने का दायित्व संभाला। पुरखों की सांस्कृतिक विरासत को आत्मसात करने का महायज्ञ। मुग़ल वंश के ख़िलाफ़ खुले युद्ध की घोषणा। उस युद्ध के लिए रणनीति, योजना और भविष्य की तैयारी। गुरु जी यमुना नदी के तट पर हिमाचल प्रदेश के पांवटा में चले गए। इस साधना और चिन्तन में लगभग पच्चीस साल का समय लगा। अब गुरु जी के आगे भविष्य स्पष्ट दिखाई दे रहा था। हिन्दुस्तान के भविष्य का इतिहास लिखने का समय आ गया था। उसके स्वर्णिम इतिहास का एक नया अध्याय लिखा जाने वाला था। उसकी शुरुआत 1674 में सुदूर महाराष्ट्र में मुग़लों की पराजय और शिवाजी के राज्याभिषेक से हो चुकी थी। अब पश्चिमोत्तर भारत में भी ठीक उसके दस साल बाद 1684 में गुरु गोविन्द सिंह जी ने चंड़ी दी वार लिख दी थी। उसके बाद 1685 में वे यमुना तट से वापिस शतद्रु के तट पर आनन्दपुर वापिस आ गए।

गुरु गोविन्द सिंह जी जानते थे कि मुग़लों को पराजित करने के लिए इस क्षेत्र की सभी महत्वपूर्ण ताक़तों को संगठित करना अनिवार्य है। भारत की संगठित शक्ति ही मुग़लों को पराजित कर सकती थी। मुग़लों का भारत में प्रसार भी यहाँ के जयचन्दों के कारण हुआ था। जिस समय लचित बडफूकन के नेतृत्व में असम औरंगज़ेब की सेना के खिलाफ मोर्चा बाँधे हुए था, उस समय औरंगज़ेब की सेना की कमान राजस्थान के महाराजा राम सिंह ही संभाल रहे थे। गुरु जी चाहते थे कि इस नए अभियान में जयचन्दों के इतिहास की पुनरावृत्ति न हो। उनके सारे प्रयास इसी दिशा में थे। अब उस नए अध्याय की पहली लडाई 1688 में शुरु हुई जिसकी चर्चा उपर की गई है। भंगानी की लडाई। इसका विस्तृत वर्णन गुरु जी ने स्वयं ही अपनी आत्मकथा में किया है। भंगानी के स्थान पर हुई इस लड़ाई में गुरु जी के शिविर पर हयात खां और नजाबत खां के बलों ने हमला कर दिया था। इस लड़ाई से गुरु जी को अनेक नए व्यवहारिक अनुभव हुए। इसी को ध्यान में रखते हुए गुरु जी ने पश्चिमोत्तर हिमालयी क्षेत्र के छोटे बड़े राजाओं को एकत्रित करने का प्रयास करना शुरु किया। बदले वातावरण में राजाओं ने मुग़ल सूबेदारों को टैक्स देना बन्द कर दिया। 1691 में वर्तमान हिमाचल प्रदेश के नादौन में लड़ाई हुई। गुरु जी की सेना, राजा भीम चन्द और अन्य राजाओं की सम्मिलित सेना व मियाँ खान की सेना के बीच युद्ध हुआ। इस लड़ाई में गुरु जी की विजय हुई। मिल जुल कर लड़ने का यह नया प्रयोग था जो सफल हुआ था। दूर दूर तक इसकी गूँज सुनाई देने लगी। इसके पाँच साल बाद 1696 में एक बार फिर यही प्रयोग दोहराया गया। इस बार युद्ध सतलुज के किनारे गुलेर के स्थान पर हुआ। गुरु जी की सेना और गुलेर रियासत की सेना ने मिल कर दिलाबर खान के पुत्र रूस्तम खान, और बाद उसके कमांडर हुसैन खान के साथ युद्ध किया। हुसैन खान मारा गया। इसकी सूचना

औरंगज़ेब को भी मिल रही थी। वह दक्षिण भारत में मराठों के साथ उलझा हुआ था, जहाँ शिवाजी मराठा ने हिन्दू पद पादशाही के नाम से राज्य स्थापित कर लिया था। वह समझ गया था कि दक्षिण भारत तो मुग़लों के हाथ से निकल ही रहा है, पश्चिमोत्तर में भी संकट के बादल छा गए हैं। इस हिस्से में मुग़लों के नष्ट हो जाने का अर्थ होगा पूरे भारत से उनके पतन की कथा की शुरुआत। इसलिए उसने अपने मातहतों को आदेश जारी किए कि किसी भी तरह लोगों को आनन्दपुर में एकत्रित होने से रोका जाए। सत्रहवीं शताब्दी का अंत हो रहा था। हिमाचल प्रदेश के रिवालसर में 1701 में गुरु जी ने स्थानीय राजाओं के साथ लम्बा विचार विमर्श किया। मुग़लों का मुक़ाबला संगठित शक्ति से किया जाए। लेकिन सत्ता के भूखों के क्षुद्र स्वार्थ रास्ते में बाधा बन जाते थे। भारत के इस कमज़ोर मर्मस्थल को मुग़ल भी जानते थे। इसीलिए सुदूर मध्य एशिया से आकर अभी भी भारत में जमे हुए थे।

ख़ालसा पंथ की स्थापना--

श्री गोविन्द सिंह जी को छोटी आयु में ही अपने पिता की शहादत के बाद इस 1469 से शुरु हुई लगभग दो सौ साल पुरानी दश गुरु परम्परा की बागडोर संभालनी पडी थी। औरंगज़ेब धुर दक्षिण तक अपने वंश की विजय पताका फहराने के लिए एड़ी-चोटी का ज़ोर लगा रहा था। लेकिन दूसरी ओर भारत के लोग भी इस विदेशी शासन को उखाड़ने के लिए प्राणपण से लगे हुए थे। पश्चिमोत्तर भारत ही इस मुग़ल शासन से सर्वाधिक त्रस्त था। मुग़ल वंश की विजय पताका सबसे पहले इसी पश्चिमोत्तर भारत में फहराई थी। उसकी जड़ें इसी इलाक़े में मज़बूत थीं। गुरु परम्परा ने तो पहले दिन से ही इस विदेशी शासक वंश से मोर्चा ले लिया था, जब प्रथम गुरु श्री नानक देव जी ने बाबर की विजयी सेना को देखते ही चेतावनी दी थी - खुरासान खसमाना किया, हिन्दोस्तान डराईया। हिन्दोस्तान में व्याप्त इस भय को दूर कर, स्वतंत्रता की ज्योति पुनः प्रज्जलवित कर, इस स्वतंत्रता संग्राम को गति देने का प्रश्न था। एक नई आशा जग गई थी। पंचम गुरु श्री अर्जुन देव जी ने अपनी शहादत से मुग़ल वंश के अन्त की गाथा का प्रथम अध्याय लिख ही दिया था। इधर इस स्वतंत्रता संग्राम का दूसरा अध्याय पश्चिमोत्तर में पंजाब के मैदानों और शिवालिक की उपत्यकाओं में लिखा जा रहा था। नवम गुरु श्री तेगबहादुर जी ने इसमें अपना बलिदान देकर इसका दूसरा अध्याय भी लिख दिया। गुरु गोविन्द सिंह जी ने इस पूरे आन्दोलन को एक नया आयाम दिया और विदेशी शासकों से लोहा लेने और उन्हें परास्त करने के लिए संगठित प्रयास किए। इसी पंजाब की धरती से श्री कृष्ण ने पाँच हज़ार साल पहले कुरुक्षेत्र में घोषणा की थी -

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥७॥
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे ॥८॥

अर्थात हे पार्थ, जब धर्म का क्षय होता है तो मैं उस की पुनः स्थापना के लिए बार-बार इस लोक में आता हूँ। गुरु गोविन्द सिंह जी भी अपने जीवन लक्ष्य के बारे में पहले ही बता ही चुके थे। वे इस लोक या संसार में धर्म की पुनर्स्थापना के लिए ही आए थे। वे कहते हैं-

हम इहकाज जगत मों आए धरम हेतु गुरुदेव पठाए॥
जहां-तहां तुम धरम विथारो॥ दुष्ट दोखियन को पकर पिछारो।।

और अब वह धर्म यज्ञ शुरु हो गया था। लगभग सवा तीन सौ साल पहले 1699 में शिवालिक की उपत्यकाओं में दश गुरु परम्परा के अन्तिम गुरु श्री गुरु गोविन्द सिंह जी ने उस समय देश और धर्म की विकट समस्याओं पर विचार करने व उसका निदान करने के लिए देशवासियों का एक सम्मेलन शिवालिक की उपत्यकाओं में बुलाया था। पाँच सौ साल से भारत पहले विदेशी सुलतानों से और बाद में विदेशी मुग़ल आक्रान्ताओं से लड़ रहा था। लेकिन उन्हें परास्त कर देश से खदेड़ देने में सफलता नहीं मिल रही थी। इतना तो साफ़ दिखाई दे रहा था कि जाति भेद ने देश की जनता को आपस में बाँट रखा था। जाति भेद भी था और राजे रजवाड़े अपने व्यक्तिगत क्षुद्र स्वार्थों के लिए एक जुट होकर विदेशी आक्रान्ताओं से लोहा लेने के लिए भी तैयार नहीं थे। व्यक्तिगत शौर्य की कमी नहीं थी लेकिन संगठन का अभाव था। गुरु गोविन्द सिंह जी ने भी उस समय के सभी छोटे बड़े राजा-रजवाड़ों को एकत्रित करने की कोशिश

की थी लेकिन इसमें उन्हें बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिली थी। राजा केवल उदासीन ही नहीं थे, कई तो शत्रु के खेमे में जाकर खड़े होने में भी लज्जा महसूस नहीं करते थे। यही कारण था कि अब गुरु जी ने देश की आम जनता से सीधा सम्वाद स्थापित करने का निर्णय किया। यह राष्ट्रीय सम्मेलन उसी का नतीजा था। गुरु जी शायद इसी सम्मेलन में भारत के भविष्य का सपना देख रहे थे। चिड़ियों से बाज लड़ाने का नया अभिनव प्रयोग। एक नए महाभारत की तैयारियाँ हो रही थीं। इस सम्मेलन में भाग लेने के लिए देश भर में सन्देश संचारित हो रहे थे। हर जगह मौखिक रूप से ही एक दूसरे को बताया जा रहा था। हिमालय में शिवालिक की पहाड़ियों में गुरु जी ने वैशाख मास में बुलाया है। गुरु जी का यह संदेश देखते-देखते भारत के कोने-कोने में फैल गया। लोगों में उत्तेजना फैल रही थी। मुग़ल सत्ता को आशंका तो हो रही थी कि फ़िज़ाओं में ही कुछ सरगोशियां हो रही हैं। लेकिन गाँव-गाँव की बोली में, संकेतों में ही सब कुछ तय हो रहा था। विक्रमी सम्वत 1756 का बैसाख। कई महीने पहले घरों से चलना पड़ेगा। चलना भी ऐसे पड़ेगा कि किसी को कानों-कान ख़बर न हो। कहना न होगा पूरे भारत से हज़ारों की संख्या में लोग, तमाम ख़तरों को झेलते हुए, गुरु जी की आज्ञा को शिरोधार्य कर पंजाब की ओर जा रहे थे। एक दूसरे से अनजान। उनके आह्वान पर एक लघु भारत आनन्दपुर में प्रकट हो गया था। अलग अलग भाषाएँ बोलने वाले लगभग एक लाख लोग देश के हर हिस्से से यहाँ पहुँचे थे। देश के कोने कोने से लोग आए हुए थे। एक दूसरे की भाषा नहीं जानते थे। गुरु जी की पुकार सुन कर सुदूर दक्षिण तक से लोग आए हुए थे। इस सम्मेलन में पूर्वी भारत से भी हज़ारों श्रद्धालु उपस्थित थे। यह वह इलाक़ा है जहाँ सागर भारत माता को प्रणाम करता है। सभी लोग अपने अपने इलाक़े से गुरु जी के लिए कुछ उपहार लाए थे। उपहार क्या है, इसकी महत्ता नहीं थी। उपहारों में श्रद्धालुओं का स्नेह झलकता था। क़ीमत उपहार की नहीं थी। क़ीमत भावना की थी। लम्बी चर्चाएँ चलती रहीं। देश के कोने कोने से आए लोगों में। अपने अपने क्षेत्र की समस्याएँ। देश और धर्म को बचाने के लिए उपायों पर चर्चाएँ। और फिर वह दिन आ गया जिस दिन गुरु जी ने देश भर से आए लोगों को सम्बोधित करना था। दूर दूर तक नरमुंड ही नरमुंड दिखाई दे रहे थे। कथा कीर्तन चल रहा था। लोग भाव विभोर होकर सुन रहे थे। गुरु जी मंच पर आए। चारों ओर सन्नाटा छा गया। सुई गिरने की भी आवाज़ आए, ऐसा सन्नाटा। गुरु जी कुछ देर तक तो चुप रहे। चारों ओर फैले जनसमूह को देखते हुए। गुरु जी भाव विभोर हो गए। उन्होंने देश धर्म की रक्षा पर विचार करते हुए अनेक समाधानों पर विचार किया था। अब वे भारत के लोगों के साथ, जो गुरु जी की एक पुकार पर, अपनी जान की परवाह न करते हुए, विदेशी साम्राज्य की गिद्ध दृष्टि से बचते हुए, यहाँ पहुँचे थे सीधा सम्वाद कर रहे थे।

गुरुजी की गुरु गंभीर वाणी चारों ओर गूँज उठी। चारों दिशाएँ निनादित हो उठीं। पहाड़ों से टकरा कर वह आवाज़ प्रतिध्वनित हो रही थी। सभी को लगा जैसे उनकी रीढ़ रज्जु में विद्युत प्रवाह दौड़ गया हो। क्षण भर में निराशा का कोई भी भाव, यदि था तो ग़ायब हो गया। गुरुजी ने देश और धर्म की रक्षा का रास्ता निकाल लिया था। सभी लोग वह रास्ता जानने के लिए उत्सुक हो रहे थे। गुरु जी ने इस राष्ट्रीय सम्मेलन में नंगी तलवार लेकर देश धर्म हेतु बलिदान के लिए युवकों को आत्मोसर्ग के लिए ललकारा। देश और धर्म की रक्षा के लिए एक शीश चाहिए। भारत के कोने कोने से आए जन समुदाय में से कोई है जो मुझे अपना शीश दे सके। गुरु जी बहुत बड़ा उपहार माँग रहे थे। प्राणों का उपहार! चारों ओर चुप्पी छा गई। लेकिन यह चुप्पी निराशा की नहीं उत्साह की थी। एक एक कर पाँच रणबांकुरों ने स्वयं को बलिदान के लिए प्रस्तुत कर दिया। लाहौर या लवपुर से दया राम, हस्तिनापुर से धर्मचन्द, द्वारिका से मोहकम चन्द, जगन्नाथपुरी से हिम्मत राय और कर्नाटक के बीदर से साहिब चन्द। इन्होंने अपने प्राण गुरु चरणों में अर्पित कर दिए। अब उनकी कोई जाति नहीं बची थी। यह उनका नया जन्म था। वे सभी एक ही जाति के हो गए थे। अब वे ख़ालिस थे। उन्होंने देश धर्म की रक्षा के लिए गुरु जी के आगे अपने प्राण अर्पित करके अपने आप को शुद्ध कर लिया था। अब वे पावन थे पवित्र थे। अब वे एक नए जाति विहीन पंथ में शामिल हो गए थे। यही नया पंथ ख़ालसा पंथ था। ये गुरु जी के पाँच प्यारे थे। यह लोकतंत्र पर आधारित नई पंचायत थी। पंच में परमेश्वर है। अब यही पंच पंचायत निर्णय लेगी। इन पाँचों को सिंह बनाने के बाद गोविन्द राय स्वयं भी इन्हीं के हाथों गोविन्द सिंह बन गए। जाति के बंधन टूट गए। यह भी महज़ संयोग ही कहा जाएगा कि जब देश और धर्म पर प्राण अर्पित करने का समय आया तो जो लोग आगे आए उनमें से अधिकांश उन जातियों के थे जिन्हें पिछड़ा कहा जाता था। इनमें से एक पश्चिमी भारत में द्वारिका के मोहकम सिंह थे। उन्होंने स्वयं को देश धर्म के लिए अर्पित करके द्वारिका का नाम एक बार फिर इतिहास के पन्नों में दर्ज कर दिया। द्वारिका का इतिहास बहुत पुराना है। यह कृष्ण नगरी है। इसी द्वारिका का मोहकम

पाँच हज़ार साल बाद कुरुक्षेत्र से कुछ दूर आनन्दपुर में गुरु जी के एक आह्वान पर देश धर्म के लिए अपना शीश प्रस्तुत कर रहा था। अब लगता था गुजरात की द्वारिका में इतिहास फिर करवट लेने वाला था।

दूसरा रणबाँकुरा हिम्मत सिंह पूर्वी भारत का रहने वाला था। वह जगन्नाथ पुरी से आया था। जगन्नाथ पुरी के ऐतिहासिक मंदिर की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि जब भगवान कृष्ण यानि जगन्नाथ जी यात्रा के लिए निकलते हैं तो उनकी पूजा का अधिकार दलित समाज को ही रहता है। इसी जगन्नाथ संस्कृति के कारण उस इलाक़े में सवर्ण और अवर्ण के बीच ज़्यादा अन्तर नहीं देखा जाता। पन्द्रहवीं शताब्दी में दश गुरु परम्परा के प्रथम गुरु श्री नानक देव जी भी जगन्नाथ पुरी आए थे। इसलिए इस परम्परा से यहाँ के लोग किसी न किसी रुप में परिचित थे ही। गुरु गोविन्द सिंह जी का सन्देश और आह्वान मिलने पर सैकड़ों लोग इस शहर व आसपास के इलाक़ों से पंजाब में आए होंगे।

ओडीशा की जगन्नाथ संस्कृति सामाजिक समरसता की संस्कृति है। लोक कथा में यह आता है कि जब गुरु नानक देव जी ओडीशा आए थे तो उनके साथ उनका शिष्य मरदाना भी था जो मुसलमान था। जगन्नाथ मंदिर को साकार ईश्वर का मंदिर माना जाता है। इस्लाम साकार ईश्वर की संकल्पना में विश्वास नहीं करता। अतः मरदाना जगन्नाथ मंदिर का महाप्रसाद कैसे ग्रहण कर सकता था। मंदिर में तो जगन्नाथ जी की मूर्ति भी थी। मरदाना मंदिर में कैसे जाता। मंदिर में उन लोगों के लिए अनुमति नहीं थी जो हरि की इस संकल्पना में विश्वास नहीं करते थे। मरदाना संकट में था। वह भूखा था। उसने अपने गुरु श्री नानक देव जी को उलाहना दिया कि आप मुझे कहाँ ले आए जहाँ मुझे भूखा ही सोना पड़ रहा है। उलाहना अभी पूरा नहीं हुआ था कि चमत्कार हो गया। किसी अनजान ने सोने चान्दी के बर्तनों में उन्हें भोजन का प्रसाद खाने के लिए दिया। मरदाना खाकर तृप्त हो गया। लेकिन उधर मंदिर में हड़कम्प मच गया। मंदिर के सोने के बर्तन गुम हो गए थे। पुजारी राजा के पास मंदिर में चोरी की शिकायत लेकर गए। राजा के स्वप्न में गुरु नानक देव जी आ चुके थे। राजा पुजारियों को साथ लेकर सागर तट पर आया। नानक देव जी तपस्या में लीन थे। सोने के बर्तन पास ही पड़े थे। सभी ने उनको नमन किया। सायंकाल को गुरु जी ने ईश्वर की संकल्पना पर अपना विचार प्रस्तुत किया। यही ओडीशा की जगन्नाथ संस्कृति की विशेषता है। वह तत्व को पहचानती है, ऊपरी भेदों में विश्वास नहीं रखती। सत्रहवीं शताब्दी के मुस्लिम भक्त कवि सालबेग की भी यही कथा है। पुजारियों ने जगन्नाथ के उपासक सालबेग को रथयात्रा के समीप नहीं आने दिया और रथ ने आगे बढ़ने से इंकार कर दिया। हज़ारों भक्त खींचने का प्रयास करते रहे लेकिन रथ टस से मस नहीं हो रहा था। अंत में जब सालबेग ने रथ को हाथ लगाया तो रथ आगे बढा। ओडीशा की संस्कृति समरसता की संस्कृति है। इसलिए 1699 के उस अखिल भारतीय सम्मेलन में जिसमें जाति पंथ भेद को समाप्त कर ख़ालसा पंथ की रचना का प्रस्ताव आया और उस रचना के लिए प्रथम बलिदानियों की पुकार हुई तो ओडीशा का हिम्मत सिंह कैसे आगे न आता ? हिम्मत सिंह ने ख़ालसा पंथ की नाभिनाल को ओडीशा के साथ बाँध दिया। यह रिश्ता अटूट हो गया। धर्मचन्द हस्तिनापुर का रहने वाला था। पांडवों का हस्तिनापुर। आज का मेरठ हस्तिनापुर का ही अंग था। इस हस्तिनापुर ने न जाने कितने इतिहास चक्र अपनी आँखों से देखे थे। आज एक नया इतिहास चक्र शुरु होने वाला था। हस्तिनापुर फिर अँगड़ाई ले रहा था। सुदूर कर्नाटक से साहिब सिंह ने अपने प्राण संकट में डाल कर पंजाब की तीर्थ यात्रा को दक्षिण के पठारों तक पहुँचा दिया। और पाँचवा सैनिक था लवपुर या लाहौर का साहिब सिंह। मर्यादा पुरुषोत्तम राम के बेटे लव के बसाए लाहौर को पश्चिमोत्तर भारत का सांस्कृतिक केन्द्र माना जाता था। राम ने लंका जीत कर भारत को निरापद किया था और उसी लवपुर से दया सिंह गुरु जी के आगे शीश झुकाए खड़ा था। देश धर्म के लिए शीश अर्पित है। भारत की चारों दिशाओं से एक-एक प्रतिनिधि और आक्रान्ताओं से सबसे पहले टकराने वाले पंजाब की राजधानी से पाँचवा प्रतिनिधि। इस प्रकार भारत की पहली पंचायत तैयार हुई। ख़ालसा का जो भी निर्णय होगा वह इन पांच प्यारों के माध्यम से ही होगा। इस अपार जन समूह के माध्यम से गुरु गोविन्द सिंह जी पूरे राष्ट्र की आत्मा या चिति से साक्षात्कार कर रहे थे। इसी साक्षात्कार से ख़ालसा पंथ प्रकट हुआ। देश की चारों दिशाओं से चार महापुरुषों की आत्मबलिदान हेतु प्रस्तुति और अन्त में केन्द्र भाग से पाँचवें महापुरुष की प्रस्तुति से बलिदान की पंच परम्परा स्थापित हुई। सम्पूर्ण राष्ट्र के ये पाँच मरजीवडे एक नया इतिहास लिखने वाले थे। बहुत लम्बे अरसे बाद शिवालिक की उपत्यकाओं में राष्ट्रपुरुष का सदेह साक्षात्कार लोगों ने किया। गुरु गोविन्द सिंह जी के ख़ालसा पंथ ने पंजाब में मुग़ल वंश की नींव को हिला दिया था। ■

(लेखक हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति हैं)

उन्नत तकनीक के साथ कृषि के लिए आगे आयें युवाः राधा मोहन सिंह

एग्रीविजन द्वारा कृषि पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी कृषि अनुसंधान केन्द्र, दिल्ली में संपन्न

देश के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित उन्नत तकनीकों का प्रयोग कर कृषि से किसानों की आय दोगुनी हो सकती है। कृषि क्षेत्र में व्यापक सुधार के लिए सरकार द्वारा युवाओं का कौशल विकास कर उन्हें कृषि करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है ताकि देश में किसानों के हालात में सुधार हो सके। ये बातें अभाविप के प्रकल्प एग्रीविजन द्वारा 'स्थाई कृषि व खाद्यान्न सुरक्षा हेतु संसाधनों का संरक्षण' विषय पर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठी में कृषि मंत्री राधा मोहन सिंह ने कहीं। उन्होंने कहा कि कृषि शिक्षा के बजट में युवाओं के कौशल विकास के लिए सबसे अधिक धन की बढ़ोतरी कर नवयुवकों के लिए कौशल विकास का कार्य प्रारंभ किया जा चुका है। कृषि मंत्री ने कहा कि स्वामी विवेकानंद के सपनों का भारत बनाने में हम तभी सफल हो पायेगें जब देश का युवा उन्नत तकनीकी के साथ खेती करने के लिए आगे आएगा।

इस अवसर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. एस सव्वैया ने अपने संबोधन में कहा कि विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन होने के नाते अभाविप के प्रकल्प एग्रीविजन के द्वारा कृषि कार्य में युवाओं को आगे लाने के लिए उन्हें प्रेरित करने का काम किया जा रहा है। कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मेरूदंड है, अगर मेरूदंड ही कमजोर होगा तो देश कैसे आगे बढ़ सकता है, इसलिए कृषि को सुदृढ़ करने के लिए समय समय पर एग्रीविजन द्वारा कृषि कार्यों में लगे युवकों/ शोधार्थियों/ वैज्ञानिकों को जोड़ने एवं उनका अनुभव जानने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, ताकि देश के किसान लाभान्वित हो सकें।

कार्यशाला को आई.सी.ए.आर. के डी. डी. जी डॉ. ए. के. सिंह, डॉ. एन. एस. एस. राठौर, पंजाब में पानी उपलब्धता को सुचारू रूप से बनाये रखने की दिशा में कार्य करने वाले सरदार 'बलवीर सिंह सींचेवाल ने भी सभा को संबोधित किया। बता दें कि यह कार्यशाला 24-25 मार्च 2018 को दिल्ली के पूसा परिसर के शिन्दें सभागार में आयोजित की गयी थी, जिसमें देश भर के प्रतिष्ठित कृषि संस्थानों जैसे - आई.ए.आर.आई दिल्ली, आईआईटी रूड़की, पंत नगर विश्वविद्यालय एवं जेएनयू जैसे प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों के लगभग 300 से अधिक वैज्ञानिक, शोधार्थी, प्राध्यापक एवं छात्रों ने भाग लिया।

इस दौरान बीज विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विषय पर 'डॉ. प्रभा शंकर शुक्ल, विरेन्द्र प्रसाद एवं रघुराज तिवारी' द्वारा संपादित पुस्तक सीड साईंसेज टेक्नोलॉजी : बेसिक एण्ड एप्लिकेशन और एग्रीविजन की स्मारिका का विमोचन कृषि मंत्री राधामोहन सिंह द्वारा किया गया। ■

राष्ट्र की अवधारणा को समझें छात्र: श्रीनिवास

आगरा में आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राज्य विश्वविद्यालय कार्यशाला संपन्न

'ना संघर्ष, ना तकलीफ तो क्या मजा जीने में, बड़े - बड़े तूफां थम जाते हैं जब आग लगी हो सीने में' जैसी ओजपूर्ण पंक्तियों के माध्यम से अभाविप के राष्ट्रीय सह-संगठन मंत्री श्रीनिवास ने देश भर से आये छात्रों को राष्ट्र के प्रति समर्पित होने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि छात्रों के अंदर देशभक्ति, समर्पण और भारतीय संस्कृति के प्रति आत्मीयता का भाव जागृत करना अभाविप का मूल उद्देश्य है। अभाविप कार्यकर्ता प्रत्येक विश्वविद्यालय के छात्रों में राष्ट्र की अवधारणा को समझाने और राष्ट्र विरोधी परिदृश्य को बदलने का प्रयत्न करें। श्रीनिवास ने बताया कि अभाविप अपने स्थापना काल से राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के लिए कृतसंकल्प है। वे केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आगरा में अभाविप द्वारा आयोजित दो दिवसीय अखिल भारतीय राज्य विश्वविद्यालय कार्यशाला में आए विभिन्न प्रांतों के प्रतिनिधियों को संबोधित कर रहे थे।

वहीं केन्द्रीय हिन्दी संस्थान के निदेशक प्रो. नंदकिशोर पांडेय ने छात्रों को अपने संबोधन में कहा कि समय के साथ अभाविप का काफी विस्तार हुआ है। समाज को अभाविप से अपेक्षा है कि इस कार्यशाला में जरूर कुछ नवनीत निकलेगा। उन्होंने कहा कि अभाविप विचारवान संगठन है और अपने विचार से कार्यकर्ताओं को पुष्ट करेगा।

विद्यार्थी परिषद् के अखिल भारतीय विश्वविद्यालय कार्य प्रमुख श्रीहरि बोरिकर ने बताया कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य विभिन्न विश्वविद्यालय के परिसरों में युवाओं की भूमिका एवं छात्रों द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न प्रयासों की जानकारी, वर्तमान शैक्षिक स्थिति पर चर्चा, पर्यावरण, कला, संस्कृति, स्वच्छता आदि विषयों के बारे में छात्र- छात्राओं को जागरूक करना है। इसके साथ ही उन्होंने कहा कि वामपंथी बंदूक और विकास की बात एक साथ करते हैं, यह निंदनीय है। आज विद्यार्थी परिषद् विश्वविद्यालयों के परिसर में छात्रों को उनकी रुचि के अनुरूप उचित मंच दे रहा है, उन्हें राष्ट्र निर्माण के कार्य के लिए प्रेरित कर रहा है।

क्षेत्रीय संगठन मंत्री मनोज नीखरा ने कहा कि अभाविप देश के अधिकतर विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में छात्रसंघ चुनाव में विजय हासिल कर चुकी है। आने वाले समय में स्थिति और मजबूत होगी। उन्होंने छात्रों से आह्वान किया वह पढ़ाई के साथ देश और समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्वों को समझें, उनके लिए भी समय निकालें। कार्यशाला में शहरी नक्सलवाद विषय पर पूणे के सागर शिंदे, रचनात्मक गतिविधियों व प्रयोग विषय पर असम से आये सुनील बसुमतारी ने अपने विचार रखे। ■

बैंगलुरू में आयोजित 'युवा तरंग' कला महोत्सव संपन्न

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् बैंगलुरू (कर्नाटक) द्वारा कलाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए बैंगलुरू स्थिति ध्यानंद सागर महाविद्यालय, कुमारस्वामी में 'युवा तरंग' महोत्सव का आयोजन किया गया। अभाविप कर्नाटक प्रदेश मंत्री हर्षा नारायण ने कहा कि यह एक बहुभाषी उत्सव था। इस महोत्सव में ग्रुप डांस, फैशन शो, सोलो डांस, स्ट्रीटप्ले, पेंटिग, फोटोग्राफी, वाद्य यंत्र आदि विधाओं पर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ, जिसमें प्रदेश भर के 18 विभिन्न महाविद्यालय के छात्रों ने सहभाग किया। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आने वाले प्रतियोगी को पचास हजार का नकद पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्होंने कहा कि 'युवा तरंग' का उद्देश्य समाज के भीतर छिपी हुए प्रतिभाओं को देश के सामने लाना एवं उसे प्रोत्साहित करना है। अभाविप द्वारा हर वर्ष ऐसे हजारों प्रतिभाशाली छात्रों को मंच देने का कार्य किया जा रहा है।

वहीं ध्यानंद सागर महाविद्यालय के श्रीगली स्वामी ने कहा कि अभाविप द्वारा आयोजित 'युवा तरंग' आने वाले दिनों में कर्नाटक के कलाकारों को उचित दिशा प्रदान करेगी। परिषद् ने स्थानीय कलाकारों/छात्रों की प्रतिभा को निखारने का काम किया है। महोत्सव में कर्नाटक के प्रांत संगठन मंत्री स्वामी मल्लापुरा भी उपस्थित थे। ■

साहित्य एवं संगीत के बिना मनुष्य का जीवन अधूरा : गिरीश्वर मिश्र

साहित्य और संगीत में अन्योन्याश्रय संबंध है। साहित्य अगर समाज का दर्पण है तो संगीत जीवन की कला। साहित्य हमें प्रतिपल जागरूक करवाने का काम करती है वहीं संगीत जीवन में जीने के लिए रस भर देती है। साहित्य और संगीत से विहीन मनुष्य का जीवन अधूरा है। ये बातें महात्मा गांधी अंतर-राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति गिरीश्वर मिश्र ने कहीं। वे अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद्, **विदर्भ प्रांत** द्वारा आयोजित महाकवि कालिदास संगीत समारोह, **वर्धा** को संबोधित कर रहे थे।

विदर्भ प्रांत द्वारा आयोजित 29 वें महाकवि कालिदास संगीत समारोह में सैकड़ों छात्रों ने प्रतिभाग लिया, जिसमें 30 से अधिक छात्रा प्रतिभागी उपस्थित थीं। यह समारोह वर्धा में आयोजित किया गया था, जिसमें छः प्रमुख कला शास्त्रीय संगीत गायन स्पर्धा, सुगम गायन, शास्त्रीय नृत्य, लोकनृत्य समूह, स्वरवाद्य एवं ताल वाद्य पर आधारित था। संगीत समारोह का उद्घाटन वर्धा के सांसद रामदास एवं महात्मा गांधी अंतर- राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय के कुलपति गिरीश्वर मिश्र ने संयुक्त रूप से किया। प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान आने वाले प्रतिभागियों के लिए क्रमशः 11,000, 7,000 एवं 5000 की पुरस्कार राशि रखी गई थी। तीन दिन तक चले इस संगीत प्रतियोगिता में शास्त्रीय संगीत गायन कला प्रकार में स्वरली जोशी प्रथम, अमन गोरमड़े को द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार मिला। वहीं सुगम संगीत में प्रतीक महैस्कर को प्रथम पुरस्कार मिला द्वितीय पुरस्कार प्रियंका पाटिल और तृतीय पुरस्कार वृषभ पारिस एवं श्रद्धा वानखड़े को मिला। जबकि शास्त्रीय नृत्य में प्रथम स्थान गजानन तोडसम को, द्वितीय विश्रुति पोबालु एवं तृतीय सुरभी वर्धा ने हासिल की। लोकनृत्य में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के दशावतार ग्रुप ने प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया, द्वितीय पुरस्कार वर्धा के फ्रीडम ग्रुप को मिला एवं तृतीय शासकीय अध्यापक ग्रुप मोहड़ी, भंडारा ग्रुप को मिला। ■

दिल्ली सरकार के खिलाफ अभाविप का हल्ला बोल

अभाविप ने विभिन्न मांगों को लेकर किया दिल्ली विधानसभा का घेराव

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् ने दिल्ली सरकार के खिलाफ हल्ला बोल दिया है। 28 मार्च 2018 को हजारों की संख्या में अभाविप कार्यकर्ताओं ने दिल्ली विधानसभा का घेराव किया। दिल्ली विधानसभा चुनाव के दौरान अरविंद केजरीवाल के द्वारा किये गये वादें को याद दिलाते हुए परिषद् कार्यकर्ताओं ने विधानसभा के पास जोरदार प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान परिषद् के कार्यकर्ताओं ने पुलिस के दो बेरिकेडस को तोड़ कर विधानसभा में घुसने की कोशिश की। लेकिन पुलिस ने कार्यकर्ताओं को आगे बढ़ने से रोकते हुए हिरासत में ले लिया, जिन्हें कुछ घंटों के बाद छोड़ दिया गया। अभाविप ने केजरीवाल सरकार पर आरोप लगाया कि चुनाव के दौरान अरविंद केजरीवाल ने जो वादे किए थे, उसे अभी तक पूरा नहीं किया गया है। दिल्ली छात्राओं के लिए असुरक्षित है।

विद्यार्थी परिषद् के हजारों कार्यकर्ताओं ने दिल्ली विश्वविद्यालय के नॉर्थ कैंपस से विधानसभा तक पैदल मार्च निकालते हुए दिल्ली सरकार व मुख्यमंत्री के खिलाफ जबरदस्त नारेबाजी की और विधानसभा का घेराव किया। अभाविप के दिल्ली प्रदेश मंत्री भरत खटाना ने कहा कि अरविंद केजरीवाल ने कहा था कि दिल्ली में नए विद्यालयों व महाविद्यालयों का निर्माण किया जाएगा। छात्राओं की सुरक्षा के लिए पुलिस से मिलकर बसों में मार्शल नियुक्त करने के साथ ही उचित कदम उठाए जाएंगे, सीसीटीवी कैमरे लगाए जाएंगे, महिला कमांडो की तैनाती की जाएगी, लेकिन तीन वर्ष से अधिक बीत जाने के बाद भी केजरीवाल सरकार अपने वादों पर खरा नहीं उतरी है। उन्होंने कहा कि हमारी मांग है कि दिल्ली के सभी सरकारी स्कूलों में छात्राओं के लिए सेनेटरी नैपकिंस को उपलब्ध करवाया जाए, दिल्ली में कोचिंग सेंटर्स के नाम पर छात्रों से खुली लाखों रुपये की लूट करने वाले संस्थानों की जांच की जाए व उन पर फीस के लिए रेग्यूलेशन एक्ट लागू किया जाए, यू - स्पेशल बसें, डीटीसी ऑल रूट बस पास व दिल्ली मेंट्रो की बढ़ी हुई कीमतों को वापस लिया जाए। प्रदर्शन में अभाविप के क्षेत्रीय संगठन मंत्री नवीन शर्मा, प्रदेश संगठन मंत्री अजय ठाकुर, राष्ट्रीय मंत्री निधि त्रिपाठी, दिल्ली विश्वविद्यालय छात्र संघ सचिव महामेधा नागर, संयुक्त सचिव उमा शंकर समेत हजारों छात्र मौजूद थे। ■

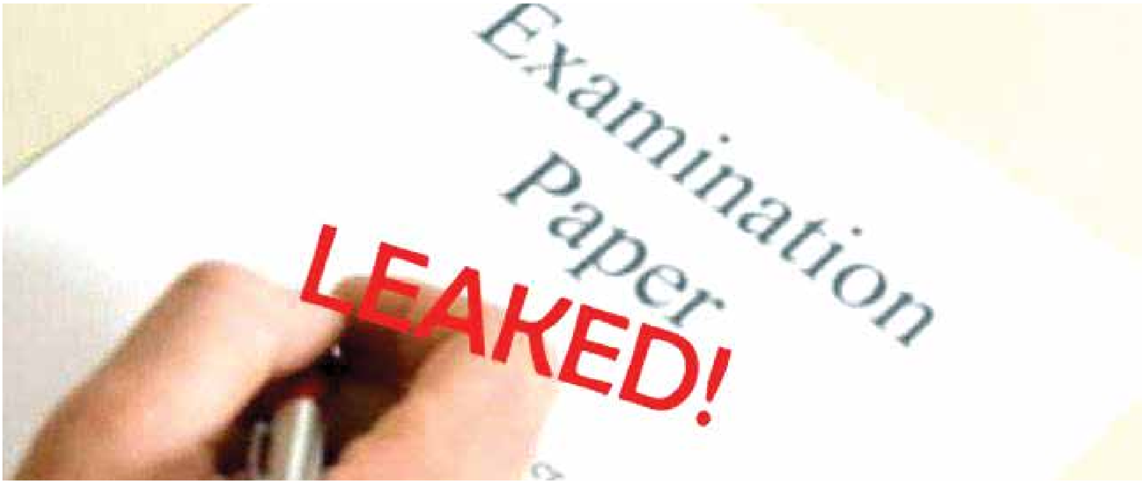

अभाविप ने की सीबीएसई अध्यक्ष को बर्खास्त करने की मांग

दसवीं एवं बारहवीं के पेपर लीक के मामले को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् (अभाविप) में काफी आक्रोश है। सीबीएसई के अध्यक्ष को हटाने और दसवीं एवं बारहवीं कक्षाओं की परीक्षा में हुए पेपर लीक के मामले से जुड़े सभी अपराधियों के खिलाफ कठोरतम कार्रवाई करने की मांग को लेकर अभाविप ने देश भर में जोरदार प्रदर्शन किया। इस मामले को लेकर अभाविप का गुस्सा थमने का नाम नहीं ले रहा है। अभाविप कार्यकर्ताओं ने दिल्ली स्थित सीबीएसई मुख्यालय पर प्रदर्शन भी किया। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के राष्ट्रीय महामंत्री आशीष चौहान ने कहा कि 'इस पेपर लीक ने देश के लाखों युवाओं को मानसिक आघात की स्थिति में डाल दिया है। उन्हें न्याय मिलना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। हम सीबीएसई बोर्ड के अध्यक्ष की तत्काल बर्खास्तगी और भविष्य में फिर से इस प्रकार की किसी भी घटना की पुनरावृति न हो, इसके लिए सभी अपराधियों को कठोर दंड देने एवं इस मामले के उचित निवारण की मांग करते हैं।' उन्होंने कहा कि अभाविप ने देश के कई स्थानों पर मात्र अल्पावधि की कार्रवाई करने हेतु दबाव डालने के लिए विरोध प्रदर्शन नहीं किया, बल्कि परीक्षा के स्वरूप और प्रक्रियाओं में प्रणालीगत सुधारों को मूर्त देने के लिए भी दबाव बनाया है।

आशीष चौहान ने सीबीएसई पर आरोप लगाया कि प्रश्न पत्र लीक हो जाता है और अपराधी को अंततः गिरफ्तार भी किया जाता है, फिर भी भविष्य में इस प्रकार की घटना को रोकने के लिए सीबीएसई द्वारा कोई संरचनात्मक परिवर्तन क्यों नहीं किये जाते हैं? कुछ कोंचिग संस्थानों और भ्रष्ट अधिकारियों के गठजोड़ के कारण लाखों विद्यार्थियों को क्यों भुगतना चाहिए? इस पेपर लीक का मुख्य अभियुक्त कौन है? इस कदाचार में शामिल प्रत्येक व्यक्ति के खिलाफ कठोर कार्रवाई के साथ - साथ हम उन संरचनात्मक बदलावों की भी मांग करते हैं जिसके माध्यम से भविष्य में ऐसे मामलों की पुनरावृति न हो और आम छात्रों को भुगतना न पड़े। उन्होंने इस दौरान यह भी मांग की कि पुनर्परीक्षा आवश्यक है ताकि मेधावी और मेहनती विद्यार्थियों को किसी भी प्रकार की परेशानी न हो, लेकिन इसके साथ साथ परीक्षा परिणाम घोषित होने में कोई विलंब न हो और सभी परिणाम समय पर घोषित किये जाएं। विद्यार्थी परिषद् आम छात्रों के लिए न्याय की मांग की जारी रखेगा और और यदि आवश्यक कार्रवाई नहीं की जाती है तो फिर से विरोध प्रदर्शन किया जायेगा।■

Ancient Indian Wisdom : An Apartheid Approach

| Prof. Sanjeev Kumar Sharma |

The present state of teaching and conducting research in Indian colleges and universities reveals a startling fact. We have since long been made to understand that the study of Social sciences in a systematic manner started from the Greeks. The traditions of scholarship under centuries of British rule have reinforced the myth of western origins of the study of politics. One wonders at the over simplification of this construct after confronting the established fact of India being the oldest civilization on earth.

It is very unfortunate that we are usually made to understand that most of the early Indian writing are in the form of scriptures and texts and are consequently looked upon as either literary or religious works of early Hindu society. The Mahabharata, Vedas, Ramayana and Sanskrit literature from Kalhan to Kamban, Fails to inspire serious study of polity as a science. Therefore, serious attempts to look into these grand old treatises for tracing inks to modern issues have largely been ridiculed as parochial, fundamentalist or conservative. Some noteworthy works have, nonetheless, been able to put forward the basic ideas of ancient Indian society for academic deliberation. Eventually, most of these works are the academic analysis carried out by Western thinkers with an intention to look into the socio-political trends of early India and are based on an outsider's perspective.

These western scholars fail to draw out and effectively analyse socio-cultural aspects from the ancient Indian scriptures and text due to a number of reasons. Their delineation from the contextual identification and distance from cultural complexities led to superficial studies of ancient Indian writing with relation to Political Science. Another grave folly committed by some present day scholars is to draw instant meaning out of the texts and attempts to tie a post-modern assimilated correlativeness with present society. The lack of gravity in approach and shallow knowledge more often than not leads to shallow comparisons, which is turn fails to attract other scholars for serious studies in this field. The huge time gap between these comparisons often leads to misinterpretation of the concepts, beliefs, value-patterns, model and functional dimensions of those ancient societies ain the light of modern theories being applied for analysis.

In India the legacy of colonial rule, acceptance of a modern democratic system, growing problems of national integration, the compulsions of a multi-religious and multi-cultural, secular set up, increasing allure of westernized models of life, decline of regional languages and the rise of western thought guided academia, are some of the main reasons behind our general apathy towards our cultural past. Lack of adequate

knowledge of Indian classical languages is another important reason why scholars fail to draw appropriate meaning out of the ancient scriptures.

It is a matter of great dismay, and definitely lamentable that contemporary pressure of the real political scenario have caused a section of the Indian intelligentsia, under the impression of the academic hegemony of the West, to inculcate a sense of Sheer disregard, indifference, disbelief, apathy, hostility and criticism for ancient Indian literature. This scenario of disregard is convenient for those who find it hard to go through ancient Indian writing because most of them are written in Sanskrit, a language that has a very strict scientific grammar and has less elasticity as compared to English. In addition to this, the adoption of the model of industrialization by Pandit Jawahar Lal Nehru, the first Prime Minister of India, as the only way of the upliftment of Indian society was a major development in Indian History. And, the adoption of globalization-liberalization model of development by Rajiv Gandhi in 1990's and, by succeeding governments has also led the Indian academia to believe that any endeavour to look into our ancient past is purely futile. Leaving apart the political aspects of this attitude of Indian academia, the greatest loss incurred because of this attitude has been in the field of serious research studies in social sciences. Though it cannot be argued that the ancient Indian writing possess emphatic solution to all the present day conflicts, yet it can be stated that serious studies of ancient Indian literature from a social science view would definitely pave the way of better understanding of the Indian mindset and thereby prove immensely helpful in shaping our socio-political values and institutions is an indigenous manner.

Strangely enough, our scholars reject the ideas of ancient Indian texts from across the argument that Indian Vedas and Puranas contain many fanciful and unscientific ideas and therefore cannot be taken seriously. But, they fail to note that all ancient texts from across the worlds contain their mythic and legendary elements, and it is not the scholarly practice to so completely reject them. It may well be argued that a close study of the texts of ancient India is essentially required to understand their comprehensive views on state, politics, sovereignty, right and duties and effective public administration beside the overwhelmingly amazing idea of welfare state.

It is astonishing to note that some Indian universities have not even bothered to include the study of ancient Indian political thought in their syllabi. This is an area of great concern for all of us and requires sincere attempts from all in this direction. At some places, these views may be found to be challenging, but the desire is to start a healthy debate on these issues. Your disagreement of academic progress concern will pave the way to greater sincerity in our intellectual pursuits. As the Shastras declare.

(Writers is a Professor at Meerut university)

प्रिय मित्रों !

शिक्षा - क्षेत्र की प्रतिनिधि - पत्रिका के रूप में 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' का अप्रैल 2018 अंक आपके समक्ष प्रस्तुत हैं। यह अंक 1857 की क्रांति का पुनरालोकन, समरसता दिवस, खालसा पंथ की स्थापना जैसे महत्वपूर्ण लेख एवं विभिन्न समसामयिक घटनाक्रमों व खबरों को समाहित किए हुए हैं। आशा है, यह अंक आपके आवश्यकताओं के अनुरूप उपादेय साबित होगा। कृपया 'राष्ट्रीय छात्रशक्ति' से संबंधित अपने सुझाव व विचार हमें नीचे दिए गए संपादकीय कार्यालय के पते अथवा ई - मेल पर अवश्य भेजें : -

'राष्ट्रीय छात्रशक्ति'
26, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नयी दिल्ली - 110002.
फोन : 011-23216298

chhatrashakti.abvp@gmail.com
www.facebook.com/rashtriyachhatrashakti
www.twitter.com/chhatrashakti1

हमारी निजता का व्यापार : डाटा लीक प्रकरण

हाल के दिनों में हुए फेसबुक डाटा लीक विवाद के चलते वैश्विक स्तर पर निजता की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है।। यह मामला इसलिए अधिक गंभीर है क्योंकि करीब पांच करोड़ लोगों की निजी जानकारी एक राजनीतिक विश्लेषक कंपनी कैंब्रिज एनालिटिका को प्रदान की गयी। कैम्ब्रिज एनालिटिका लंदन आधारित एक राजनीतिक रिसर्च ऑर्गेनाइजेशन है, जिसने साल 2016 में डोनाल्ड ट्रंप के इलेक्शन कैंपेन में उनका सहयोग किया। कैंब्रिज एनालिटिका कंपनी ने अमेरिकी मतदाताओं के फैसले की भविष्यवाणी करने के साथ साथ उन्हें प्रभावित करने के लिए एक कंप्यूटर प्रोग्राम विकसित किया जिसमें लीक हुई निजी जानकारी का इस्तेमाल किया गया था। सूचनाओं की सुरक्षा में लापरवाही बरतने के लिए फेसबुक की आलोचना हुई है सवाल यह है कि यह डेटा किसलिए इस्तेमाल किया जा रहा था और कब से? हम सोशल मीडिया पर अपने निजी जीवन से जुडी तमाम यादें, यात्राओं से जुडी तस्वीरें, किसी के जन्मदिन की बधाई, किसी घटना या सामाजिक हलचल से जुडी जानकारी, अपनी ईमेल आईडी, फोन नंबर, घर का पता, कहीं आने जाने की जानकारी, वाद संवाद, आदि को साझा करते हैं। हम मुफ्त में बिना किसी शुल्क के अपने इन सभी कार्यों को बड़ी आसानी से कर लेते हैं। क्या हमने यह सोचा है कि आखिर क्यों फेसबुक हमें इतने बड़े संचार माध्यम की सेवा मुफ्त में प्रदान करता है? वास्तव में फेसबुक के पास हमारी निजी जानकारी का डाटा होता है जो आज के समय में सबसे कीमती है। डाटा लीक विषय पर देश के आम नागरिकों के विचार को इस अंक में परिचर्चा का विषय बनाते हुए पेश है राष्ट्रीय छात्रशक्ति पत्रिका के लिए उत्कर्ष श्रीवास्तव की एक रिपोर्ट....

यह एक अत्यंत गंभीर विषय है। किसी डाटा का सम्बन्ध ना केवल किसी की ज़िन्दगी से है अपितु यह एक व्यक्ति के सम्मान से भी जुड़ा हुआ है। किसी भी व्यक्ति की निजी ज़िन्दगी में घुसना या फिर कहीं चोरी छुपे घुसना एक अपराध है। फेसबुक जैसी जिम्मेदार संस्था ने यह लापरवाही की है और हम सब के लिए यह एक सबक है। हमें इससे सबक लेते हुये अपनी गोपनीयता के प्रति सजग रहना होगा और अपने साथ आस पास के लोगों में भी सजगता फैलानी होगी। जागरूकता के अभाव में हम अपनी निजी जानकारी को खुद से ही किसी और के हाथों में सौंप देंगे।

— **श्रीमती अर्चना सिंह,** शिक्षा सहायक, राष्ट्रपति भवन

वास्तव में हम सोशल मीडिया पर अपनी निजी जानकारी को अपने होश में परोसते हैं। अपने दैनिक क्रिया कलाप, परिवार, मित्रों, आदि की निजी तस्वीरों की जानकारी हम स्वयं पोस्ट करके उसे सार्वजनिक करते हैं, फिर प्राइवेसी के नाम पर हो हल्ला क्यों ? यह तो बेवजह का विलाप हुआ, जबकि हमें इसकी जानकारी पहले से ही है। आज के समय में किसी व्यक्ति की निजी जानकारी लेकर कोई क्या कर सकता है जब सत्यापन की प्रक्रिया में कई चरण होते हैं। या तो हम सोशल मीडिया पर स्वयं एहतियात बरतें या फिर जो हो रहा है उसके लिए किसी अन्य को दोष ना दें।

— **वरुण मिश्र,** प्रतियोगी छात्र, पटना

आज सोशल मीडिया एक ऐसा सरल स्थान है जहाँ से कोई भी व्यक्ति घर बैठे किसी के भी बारे में जानकारी प्राप्त कर रहा है। घर के किसी कोने में बैठे हम लोग आज कंप्यूटर पर संसार का चक्कर लगा लेते हैं और इन सब कार्यों में इतने मशगूल हो गए हैं कि अपनी निजता को भूलकर दूसरों की निजता में दखल दे रहे हैं। इससे समाज पर बहुत बुरा असर पड़ रहा है। किसी के निजी जीवन की जानकारी को बेचना या बिना सहमति के प्रयोग करना निश्चित रूप से अपराध की श्रेणी के अंतर्गत आता है।

— **नवनीत,** बीएससी छात्र, दिल्ली विश्वविद्यालय

फेसबुक डाटा लीक में आपकी और हमारी भी गलती उतनी ही है जितनी कि फेसबुक की है। हम स्वयं अपनी मस्ती के लिए दूसरों की प्रोफाइल में जाते हैं और उनसे जुडी जानकारी जुटाते हैं। हमारी शक्ल किस सेलेब्रिटी से मिलती है, हम कितने प्रतिशत भाग्यशाली हैं, हमारा सबसे अधिक प्रिय मित्र कौन है और पता नहीं कितनी जानकारी को हम फेसबुक या अन्य किसी एप को अपनी सहमती से प्रयोग करने की अनुमति देते हैं। इसलिए हैरान होने वाली कोई बात नहीं है यदि कोई हमारी निजता को सार्वजनिक करके अपने व्यापारिक लाभ को पूरा कर रहा है।

— **स्वप्निल सिंह,** शिक्षा सहायक, भोपाल

आज व्यक्ति को अपने आस पास की खबर नहीं है लेकिन देशभर में या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली लगभग सभी हलचलों की जानकारी है। आभासी दुनिया का हमारे जीवन में सबसे महत्वपूर्ण स्थान है, इसलिए हम बेझिझक हम अपने कार्यों के लिये सोशल मीडिया का सहारा ले रहे हैं। जब हम सोशल मीडिया पर अपनी जन्मतिथि से लेकर रोजमर्रा की जिन्दगी साझा कर रहे हैं तब निजता की दलील देना नैतिक रूप से गलत है।

— **प्रो0 कविता गुप्ता,** गणित विभाग, किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली

परिषद् गतिविधियां

राष्ट्रीय कला मंच द्वारा मुंबई में आयोजित राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव में प्रथम पुरस्कार विजेता को चेक प्रदान करते अतिथिगण एवं अभाविप पदाधिकारी

बैंगलुरू में आयोजित युवा तरंग महोत्सव के दौरान प्रमाण पत्र के साथ छात्राएं एवं वाद्य यंत्र बजाते छात्र

RNI No.: DELBIL/2017/73636
Date of Posting: 10-11 April, 2018
Date of Publishing: 8 April, 2018

Postal Regd. No.: DL(C)-11/1409/2017-2019
Post Office: NDGPO, New Delhi

श्री नरेन्द्र मोदी
मा. प्रधानमंत्री

खेलों में आगे बढ़ने का स्वर्णिम अवसर

श्री शिवराज सिंह चौहान
मा. मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

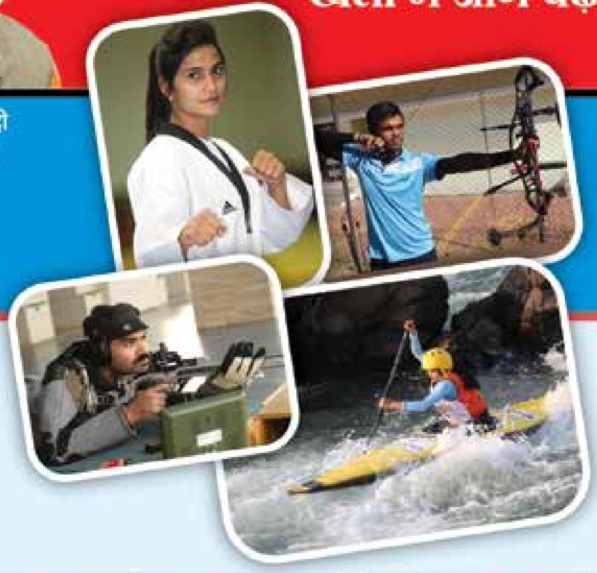

मध्यप्रदेश की खेल अकादमियों में चयन हेतु ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित

विश्वस्तरीय प्रशिक्षण द्वारा प्रतिभा को सफलता में बदलें!

अकादमी के खिलाड़ियों को सुविधाएं
•उच्च स्तरीय खेल प्रशिक्षण •नि:शुल्क आवास, भोजन, चिकित्सा इत्यादि की सुविधा •राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर टूर्नामेंट एक्सपोजर

चयन ट्रायल स्थल
सभी खेलों के लिए चयन ट्रायल स्थल टी.टी. नगर स्टेडियम, भोपाल होगा।

आवश्यक दस्तावेज़
प्रतिभा चयन के समय खिलाड़ियों को आयु, मूल निवासी/स्थानीय निवासी प्रमाण पत्र एवं आधार कार्ड लाना अनिवार्य होगा।

महत्वपूर्ण बिंदु
- चयन प्रक्रिया तीन चरणों में संपन्न होगी–
  (अ) फिजिकल टेस्ट (ब) स्किल टेस्ट (स) मेडिकल टेस्ट
- वांछित आयु 12–18 वर्ष। (शूटिंग के लिए वांछित आयु 14–18 वर्ष, सेलिंग के लिए 10–18 वर्ष, बैडमिंटन के लिए 10–15 वर्ष)
- आयु की गणना 1 जुलाई 2018 से की जायेगी।
- आवेदन–पत्र प्रतिभा चयन की निर्धारित तिथि तक स्वीकार किये जायेंगे।
- आवेदक को प्रतिभा चयन ट्रायल स्थल पर निर्धारित दिनांक को प्रातः 8 बजे उपस्थित होना अनिवार्य होगा।
- प्रतिभा चयन में भाग लेने वाले खिलाड़ियों को भोजन एवं आने–जाने का व्यय स्वयं वहन करना होगा।
- चयन प्रक्रिया में 2–3 दिन का समय लगेगा, अतः पूर्ण तैयारी से आयें।

क्र.	खेल का नाम	चयन ट्रायल तिथि
1.	तीरंदाजी	4 अप्रैल 2018
2.	टेनिस (डे बोर्डिंग) (हॉस्टल नहीं)	9 अप्रैल 2018
3.	बैडमिंटन (डे बोर्डिंग) (हॉस्टल नहीं)	12 अप्रैल 2018
4.	एथलेटिक्स	13 अप्रैल 2018
5.	ताईक्वान्डो	16 अप्रैल 2018
6.	बैडमिंटन	18 अप्रैल 2018
7.	तैराकी	20 अप्रैल 2018
8.	महिला हॉकी	25 अप्रैल 2018
9.	कुश्ती	4 मई 2018

क्र.	खेल का नाम	चयन ट्रायल तिथि
10.	शूटिंग	5 मई 2018
11.	पुरूष हॉकी	7 मई 2018
12.	फेंसिंग	11 मई 2018
13.	कराते	18 मई 2018
14.	बॉक्सिंग	28 मई 2018
15.	रोइंग	4 जून 2018
16.	घुड़सवारी	5 जून 2018
17.	क्याकिंग केनोइंग	6 जून 2018
18.	सेलिंग	8 जून 2018
19.	जूडो	9 जून 2018

आवेदन हेतु **www.dsywmp.gov.in** पर विजिट करें एवं फॉर्म भरकर सबमिट करें अथवा जिला खेल अधिकारी कार्यालय में स्वयं जाकर आवेदन करें।

Helpline No. 9111883421, 7389257670
(11 am to 6 pm)

चयन प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी उपरोक्त वेबसाईट पर उपलब्ध है।

खेल और युवा कल्याण विभाग, मध्यप्रदेश